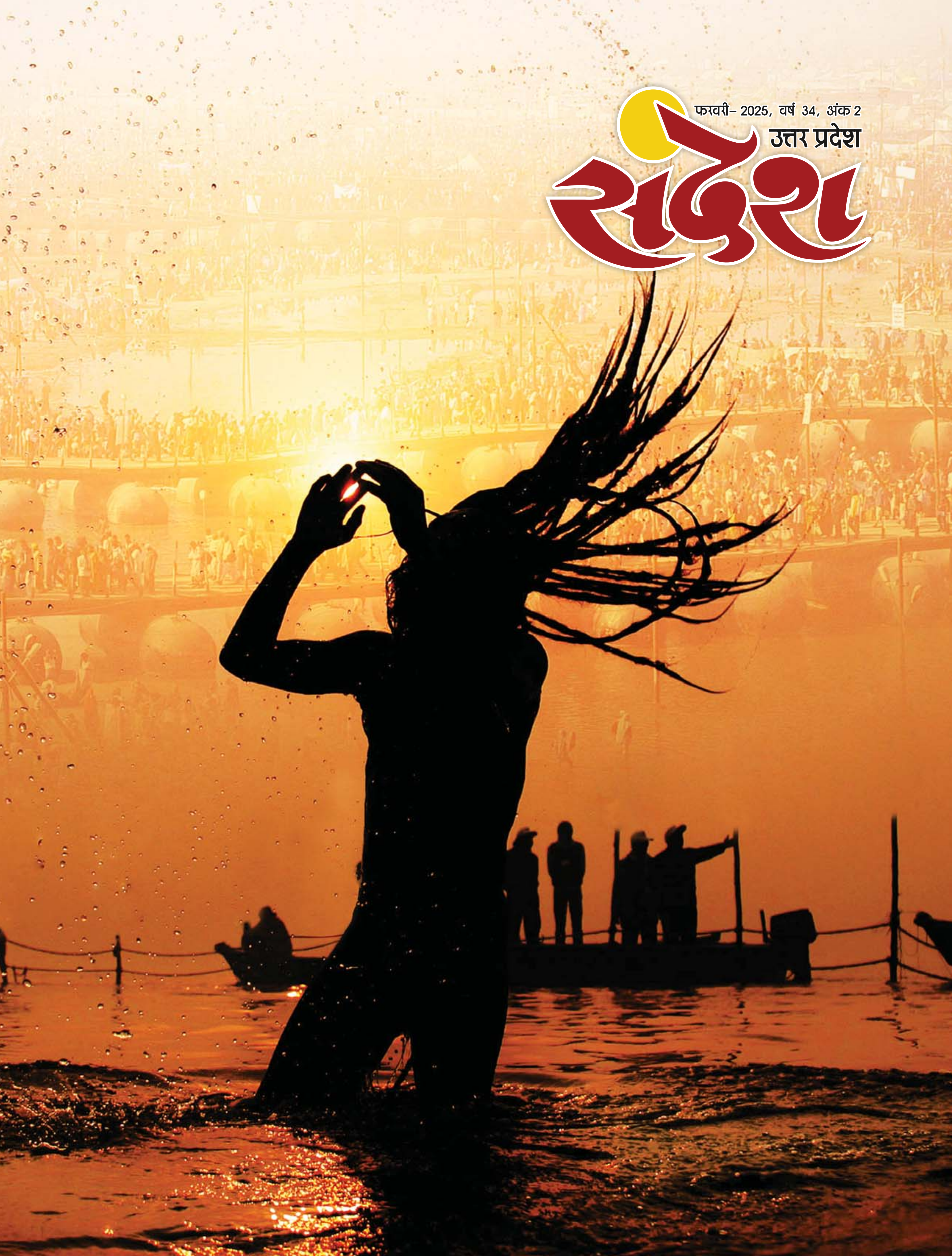
फरवरी– 2025, वर्ष 34, अंक 2

उत्तर प्रदेश संदेश

दिव्य-भव्य-डिजिटल
एकता का महाकुम्भ

सोलर रूफटॉप लगवाएं

पीएम सूर्य घर : मुफ़्त बिजली योजना

योजना के अंतर्गत 300 यूनिट मुफ़्त बिजली

संयंत्र की क्षमता	केंद्र सरकार का अनुदान (रु.)	राज्य सरकार का अनुदान (रु.)	कुल अनुमन्य अनुदान (रु.)
1 KW	30,000	15,000	45,000
2 KW	60,000	30,000	90,000
3 KW	78,000	30,000	1,08,000
4 KW	78,000	30,000	1,08,000
5 KW	78,000	30,000	1,08,000

- प्लांट की अनुमानित लागत ₹60,000 प्रति किलोवाट।
- सोलर पैनलों की कार्य क्षमता अवधि लगभग 25 वर्ष।
- 3 KW का प्लांट मात्र ₹1800/- की आसान ईएमआई पर लगवाएं।
- मात्र 7% की ब्याज दर पर बैंक लोन।
- सोलर प्लांट कमीशनिंग के उपरांत सब्सिडी डी.बी.टी. द्वारा सीधे लाभार्थी के खाते में।
- बिजली बिल में दो तिहाई तक की बचत।
- यूपीनेडा में पंजीकृत वेंडर के माध्यम से ही सोलर रूफटॉप प्लांट लगवाएं। वेंडर का चयन ध्यानपूर्वक करें।

योजना का लाभ उठाने के लिए शीघ्र आवेदन करें -

https://pmsuryaghar.gov.in/

किसी भी प्रकार की समस्या/शिकायत के लिए वेबसाइट
https://upnedasolarsamadhan.in पर जाएं।

अतिरिक्त ऊर्जा स्रोत विभाग, उत्तर प्रदेश

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

फरवरी-2025, वर्ष 34, अंक 2

उत्तर प्रदेश

संदेश

संरक्षक एवं मार्गदर्शक :

संजय प्रसाद

प्रमुख सचिव, सूचना

❖

प्रकाशक एवं स्वत्वाधिकारी :

शिशिर

सूचना निदेशक

❖

सम्पादकीय परामर्श :

अंशुमान राम त्रिपाठी

अपर निदेशक, सूचना

❖

डॉ. जितेन्द्र प्रताप सिंह

सहायक निदेशक, सूचना

❖

प्रभारी सम्पादक :

दिनेश कुमार गुप्ता

उपसम्पादक, सूचना

सम्पादकीय संपर्क : सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, पं. दीनदयाल उपाध्याय सूचना परिसर, पार्क रोड, लखनऊ

ईमेल : upsandesh20@gmail.com

दूरभाष कार्यालय : ई.पी.ए.बी.एक्स 0522–2239132–33, 9412674759, 7705800978

उत्तर प्रदेश सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग द्वारा प्रकाशित

भारत सरकार के रजिस्ट्रार ऑफ न्यूज पेपर्स की रजिस्ट्री संख्या : 55884/91

प्रकाशित सामग्री में विभिन्न लेखकों के दृष्टिकोण एवं विचार से सूचना विभाग की सहमति अनिवार्य नहीं हैं। लेखों में प्रयुक्त आंकड़े अनन्तिम हो सकते हैं।

इस अंक में

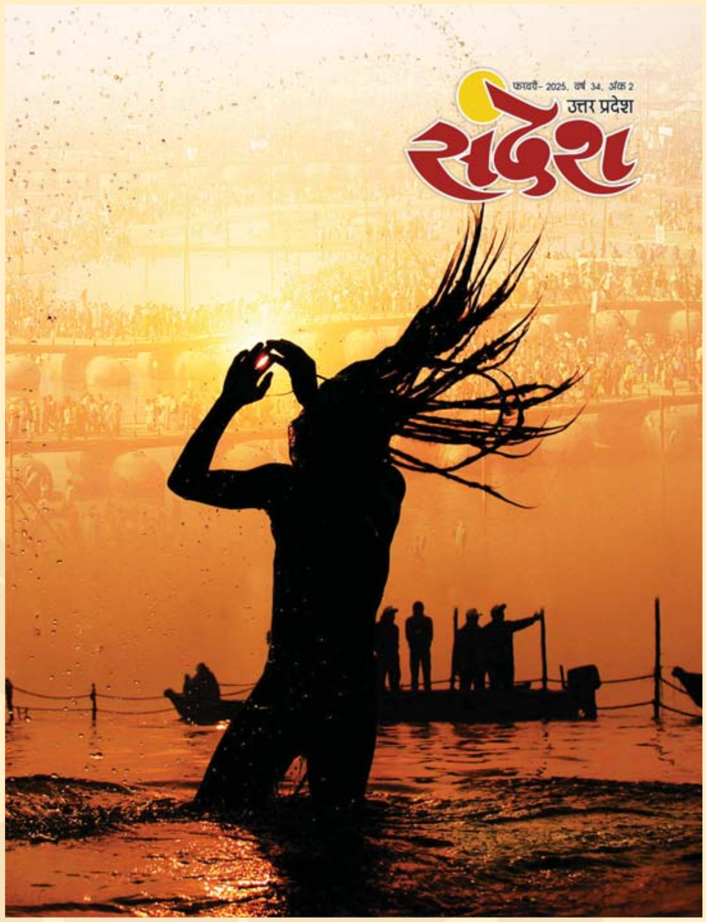

- महाकुम्भ : न जाने किस रूप में नारायण मिल जाएं 3
  -गोलेश स्वामी
- कुम्भ प्रेमी संत, राजा और नायक 6
  -सुरेन्द्र अग्निहोत्री
- महाकुम्भ अंतर्मन की चेतना का अनंत प्रवाह 16
  -प्रदीप कुमार गुप्ता
- वहीं कुम्भ जहाँ अमृत बरसा 22
  -डॉ. मधु ताम्बे
- आस्था का महाकुम्भ 25
  -डॉ. रंजना जायसवाल
- प्रयागराज महाकुम्भ का अनुपम प्रबंधन 28
  -अशोक कुमार सिन्हा

सम्पादकीय

महाकुम्भ सनातन पर्व है, आदिकालीन है। वर्ष 2025 के महाकुम्भ को विदेश के लोगों ने भी सराहा! प्रयागराज की धार्मिक छटा तो विश्वविदित है ही लेकिन 144 साल बाद के इस महान पर्व पर हुआ महासमागम निश्चित ही बहुत खास है और इसका श्रेय निश्चित रूप से प्रदेश के कर्मठ मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को जाता है।

योगी आदित्यनाथ जैसा मुख्यमंत्री मिलना उत्तर प्रदेश का महासौभाग्य ही है जिन्होंने सनातन धर्म की ध्वजा संपूर्ण भारत में ही नहीं, विश्व के कोने-कोने में फहराने की आकांक्षा जागृत की है। सच कहें तो इस बार के महाकुम्भ में विदेशों से भी लाखों श्रद्धालुओं का आगमन इस बात का साक्षी बन रहा है कि प्रयागराज के संगम से विश्व भर में सनातन धर्म का संदेश पहुंच रहा है।

इस बार प्रयागराज में चलने वाले महाकुम्भ की धार्मिक मान्यता पर गौर करें तो पता चलता है कि 144 वर्ष बाद गंगा-यमुना और सरस्वती के पवित्र संगम पर आयोजित यह कुम्भ धार्मिक आस्था और भारतीय संस्कृति का पूरी दुनिया में परचम लहरा रहा है। देश-विदेश से करोड़ों श्रद्धालु यहां त्रिवेणी संगम में पुण्य की डुबकी लगाने आ रहे हैं। यूं तो प्रयागराज ही नहीं, संपूर्ण भारत में गंगा का महत्व है लेकिन महाकुम्भ में संगम पर स्नान का विशेष महत्व लोकविदित है। मान्यता है कि इस दौरान स्नान करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है। सबसे बड़ी बात यह है कि कुम्भ में आने वाले श्रद्धालुओं को एक से एक तपस्वी साधु-संतों और नागा साधुओं के दर्शन का सौभाग्य मिलता है जिनका सामान्य दिनों में दर्शन दुर्लभ है।

मानवता की अमूर्त धरोहर के रूप में महाकुम्भ में देश ही नहीं, एशिया से यूरोप तक के साधु-संन्यासी ज्ञान, भक्ति, वैराग्य की त्रिवेणी में साधना की डुबकी लगा रहे हैं। यूनेस्को द्वारा घोषित इस मानवता के अमूर्त सांस्कृतिक विरासत को सुव्यवस्थित रूप से जोड़ने का काम मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने करके दुनिया के इस सबसे बड़े धार्मिक आयोजन को विश्व में विख्यात कर दिया है। इस बार का महाकुम्भ केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक ही नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति और एकता का उत्सव भी है।

सम्पादक

महाकुम्भ : न जाने किस रूप में नारायण मिल जाएं

–गोलेश स्वामी

महाकुम्भ दुनिया का सबसे बड़ा धार्मिक आयोजन है क्योंकि इसमें शामिल होने वाले श्रद्धालुओं की संख्या हजारों–लाखों में नहीं बल्कि करोड़ों में होती है। फिर इसकी विशेषता यह भी है कि इसमें सनातन को मानने वाले दुनिया भर के नाना प्रकार के साधु–संत, महंत, तांत्रिक, अघोरी, तपस्वी, आचार्य, कथावाचक, पीठाधीश्वर आदि शामिल होते हैं। यही वह पवित्र क्षेत्र हैं जहां पता नहीं किस रूप में आकर नारायण आपको मिल जाएं। यहां नारायण से तात्पर्य भगवान से है। जिनके दर्शन से आप धन्य हो जाएं और आप को पता भी न चले। जैसे काशी के बारे में मान्यता है कि देवों के देव महादेव वहां कभी भिक्षुक या कभी साधु रूप में विचरण करते हैं। इसलिए वहां मांगने वाले भिक्षुक या साधु को कुछ न कुछ दान जरूर कर देना चाहिए। जिससे आप उनकी कृपा के पात्र बन सकें। ऐसे ही महाकुम्भ में पता नहीं, नारायण किस साधु–संत के रूप में आपको दर्शन दे दें और आपका जीवन सफल हो जाए। महाकुम्भ का आयोजन किसी भी सरकार के लिए चुनौतीपूर्ण और गर्व दोनों का विषय है। यही वजह है कि मोदी–योगी सरकार इस बार महाकुम्भ– 2025 को अविस्मरणीय और भव्य–दिव्य बनाने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ रही है। इसकी खास वजह दोनों राजनेताओं का सनातन में आस्था रखने वाले होना भी है।

सबसे बड़ी बात यह है कि मोदी–योगी की सरकार में यह पहला महाकुम्भ होगा, क्योंकि यह हर 12 साल बाद आता है और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र की एनडीए सरकार को अभी दस साल और चंद माह हुए हैं। जबकि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ महाराज के नेतृत्व वाली उत्तर सरकार सरकार को अभी सात साल और कुछ माह ही हुए हैं। मोदी जी तीसरी बार और योगी जी दूसरी बार रिपीट हुए हैं। दोनों ही राजनेताओं ने अपनी–अपनी सरकारों को रिपीट कर एक इतिहास बनाया है। स्वाभाविक है कि सनातन के प्रति विश्वास रखने वाले ये दोनों राजनेता और उनका तंत्र दुनिया के सबसे बड़े इस आध्यात्मिक और सामाजिक आयोजन को अविस्मरणीय बनाने के लिए दिन–रात एक किए है। एक विशेष बात यह भी है कि योगी जी महाराज मुख्यमंत्री होने के साथ–साथ गोरक्षपीठ के पीठाधीश्वर और नाथ संप्रदाय के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं। एक संत होने के नाते वे महाकुम्भ के महत्व को जानते–समझते हैं और उसको भव्य और दिव्य बनाने में खास दिलचस्पी ले रहे हैं। वहां की परियोजनाओं का स्वयं निरीक्षण कर आदेश– निर्देश दे रहे हैं। संतों और अखाड़ों से सीधे संपर्क में हैं। संत और अखाड़े भी योगी जी सरकार में महाकुम्भ की व्यवस्थाओं को लेकर निश्चिंत हैं। अपने आप में वास्तव में यह विश्वास एक बड़ी बात है। महाकुम्भ को भव्य और दिव्य बनाने की दृष्टि से योगी जी ने सबसे बड़ा और सराहनीय

आते हैं। चौथे व्यक्तित्व वाले इंसानों का उद्देश्य केवल धार्मिक पर्यटन होता है। वे महाकुम्भ की इस अनूठी दुनिया का आनंद उठाते हैं और तरह–तरह के स्वरूपों के संतो–महंतों को देखकर अभिभूत होते हैं और पांचवें वे जो इन सबके लिए अलग–अलग तरह की सेवा में तैनात रहकर अपना कर्तव्य धर्म निभाते हैं। लेकिन यह सत्य है कि ये किसी भी रूप में महाकुम्भ में आते हों, सभी किसी न किसी रूप में पुण्य के भागी होते हैं।

फैसला यह किया है कि महाकुम्भ क्षेत्र यूपी का एक अलग जिला घोषित किया है। इससे महाकुम्भ की तैयारियों को भव्य और दिव्य स्वरूप देने में मदद मिलेगी। इससे तुरंत फैसले लेने और किसी भी स्थिति से निपटने में आसानी होगी। महाकुम्भ दुनिया के लिए यानी देश–विदेश के नागरिकों के लिए एक अलग दुनिया है। यहां देश–दुनिया के पांच तरह के व्यक्ति के लोग आते हैं। पहले आध्यात्मिक क्षेत्र के अखाड़ों के संत–गुरू–पीठाधीश्वर व अन्य पदधारक संत–आचार्य जो संगम (गंगा–यमुना–सरस्वती का मिलन स्थल) में स्नान कर उस दिन की अमृतधारा से अपने जीवन को धन्य करते हैं। दूसरे वे इंसान जो गृहस्थ होकर भी अध्यात्म के प्रति श्रद्धा रखते हैं और संतों, गुरुओं और आचार्यों की छत्रछाया में स्नान, ध्यान और अनुष्ठान कर अपने जीवन को भाग्यशाली बनाते हैं। तीसरे वे सामाजिक धर्मभीरू लोग जो केवल स्नान कर अपने पापों को पुण्य कर्मों में बदलने की अभिलाषा लिए

विदेशियों के लिए तो महाकुम्भ एक अजूबा है जहां नाना प्रकार के संत–महंतों के उनको दर्शन और चमत्कार देखने को मिलते हैं। ऐसा नहीं है कि सभी विदेशी केवल पर्यटन के लिए ही आते हैं, बल्कि हजारों विदेशी ऐसे भी हैं जिनकी सनातन में आस्था है। इस्कान या अन्य धार्मिक संस्थाओं से जुड़े विदेशी पुण्य कमाने के उद्देश्य से भी महाकुम्भ में आते हैं।

महाकुम्भ अपने आप में ही एक अनूठी दुनिया है। जिसमें देश–दुनिया के करोड़ों लोग एकत्रित होते हैं। शायद दुनिया में इतना बड़ा धार्मिक आयोजन भारत के अलावा कहीं नहीं होता। आपने देखा होगा कि नागा साधु पवित्र स्नान के लिए हजारों की संख्या में उमड़ते हैं। उनके दर्शन करना वाकई सौभाग्य की बात होती है। एक खास बात यदि आपने नागा साधुओं के पवित्र स्नान के समय गौर की हो तो यह होती है कि जब वे स्नान करते हैं तो बच्चों की तरह उछलते–कूदते हुए मां गंगा की लहरों से खेलते हैं और किलकारी मारते हैं। ठीक वैसे जैसे कोई बच्चा अपनी मां की गोद में अठखेलियां करता है। उनकी प्रसन्नता इससे पहले आपने शायद नहीं देखी होगी। वैसे भी पवित्र स्नान के बाद ये हजारों नागा साधु कहां चले जाते हैं, यह किसी को पता नहीं होता। इनकी एक रहस्यमयी आध्यात्मिक दुनिया हैं। जिसे वही अच्छी तरह से समझ या जान सकते हैं जो इनके सानिध्य में रहता हो या

कभी रहा हो। इनकी दिनचर्या एक शोध का विषय है। नागाओं के अलावा महाकुम्भ नाना प्रकार के संतों, महंतों का मिलन और दर्शन स्थल भी है। बड़े–बड़े तपस्वी संत–महात्माओं के दर्शन मात्र से इस महाकुम्भ में इंसानों के दुख–दर्द दूर हो जाते हैं। लेकिन इसके लिए भी आपके अंदर पवित्र भावना और आस्था होना जरूरी है। नारायण या तपस्वी संत–महंत की कृपा यूं ही हरेक को नहीं मिलती।

महाकुम्भ–2025 नए–नए प्रयोगों का भी महाकुम्भ है। यह डिजिटल युग का महाकुम्भ है। स्वाभाविक है कि यहां डिजिटल प्रयोग भी होंगे। शायद यह पहला महाकुम्भ होगा जिसमें ड्रोन से निगरानी होगी। इसके भी प्रयोग होंगे कि महाकुम्भ में आने वालों को हर तरह की सात्विक सुख सुविधा मिल सके और वे सुरक्षित भी रहें। योगी सरकार का यह फैसला भी प्रशंसा के योग्य है कि महाकुम्भ में ऐसे लोगों को सेवा में लगाया जा रहा है कि जो मांस–मदिरा का सेवन न करते हों और मृदुभाषी भी हों। सनातन के प्रति आस्था रखते हों। इससे यहां आने वाले संत–महंतों, तीर्थयात्रियों और धार्मिक पर्यटकों को किसी प्रकार की कोई समस्या न हो। अनेक ऐसे अधिकारियों और कर्मचारियों की ड्यूटी भी लगाई गई है जो बहुभाषी हैं इससे खासकर अहिंदी भाषी राज्यों के तीर्थयात्रियों और विदेशी पर्यटकों को खास फायदा होगा। विदेशियों के लिए तो महाकुम्भ एक अजूबा है जहां नाना प्रकार के संत–महंतों के उनको दर्शन और चमत्कार देखने को मिलते हैं। ऐसा नहीं है कि सभी विदेशी केवल पर्यटन के लिए ही आते हैं, बल्कि हजारों विदेशी ऐसे भी हैं जिनकी सनातन में आस्था है। इस्कान या अन्य धार्मिक संस्थाओं से जुड़े विदेशी पुण्य कमाने के उद्देश्य से भी महाकुम्भ में आते हैं।

महाकुम्भ–2025 नए–नए प्रयोगों का भी महाकुम्भ है। यह डिजिटल युग का महाकुम्भ है। स्वाभाविक है कि यहां डिजिटल प्रयोग भी होंगे। शायद यह पहला महाकुम्भ होगा जिसमें ड्रोन से निगरानी होगी। इसके भी प्रयोग होंगे कि महाकुम्भ में आने वालों को हर तरह की सात्विक सुख सुविधा मिल सके और वे सुरक्षित भी रहें। योगी सरकार का यह फैसला भी प्रशंसा के योग्य है कि महाकुम्भ में ऐसे लोगों को सेवा में लगाया जा रहा है कि जो मांस–मदिरा का सेवन न करते हों और मृदुभाषी भी हों।

महाकुम्भ एक ऐसा आयोजन है जिसमें बुनियादी सुविधाएं विकसित करने पर केंद्र और राज्य सरकार मिलकर हजारों करोड़ का खर्च करते हैं जिससे इसमें आने वाले करोड़ों श्रद्धालुओं को कोई परेशानी न हो। यही वजह है कि इसका आयोजन सरकार के लिए चुनौतीपूर्ण होने के साथ–साथ गर्व का विषय भी होता है। इसके साथ ही लाखों लोगों को इस आयोजन से प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार भी मिलता है। उनके लिए महाकुम्भ पुण्य कमाने के साथ–साथ रोजी–रोटी कमाने का जरिया भी है। अखाड़ों, साधु–संतों और आम श्रद्धालुओं के अलावा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ सहित अनेक वीवीआईपी इस महाकुम्भ में स्नान के लिए आ सकते हैं। वैसे भी मोदी जी इस तरह के आयोजनों की व्यक्तिगत रूप से ध्यान देते है। यूं तो महाकुम्भ का आयोजन शुरू होने से लेकर अंतिम दिन तक महत्वपूर्ण होता है, लेकिन सबसे अहम् दिन पवित्र स्नान पर्व होते हैं। इन दिनों की मान्यता और महत्व ज्यादा होता है और इन दिनों श्रद्धालुओं की संख्या भी सामान्य दिनों के मुकाबले ज्यादा होती है। यही दिन शासन– प्रशासन के लिए व्यवस्था के लिहाज से परीक्षा के दिन होते हैं। योगी जी ने जिस प्रकार से इस बार महाकुम्भ के लिए स्नान के समय नदी के अंदर और बाहर सुरक्षा सहित अनेक व्यवस्थाएं की हैं, वे वाकई प्रशंसनीय हैं।

योगी जी के मुख्यमंत्री रहते क्या साधु–संत और क्या आम श्रद्धालु उनमें यह विश्वास पैदा हुआ है कि वे खुद बेखौफ होकर महाकुम्भ के धार्मिक आयोजन के आध्यात्मिक आनंद के भागीदार बनने के उत्सुक हैं। इस तरह यह महाकुम्भ कई मायनों में ऐतिहासिक साबित हो सकता है। ◆

मो. : 941500379

कुम्भ प्रेमी संत, राजा और नायक

—सुरेन्द्र अग्निहोत्री

कुम्भ स्नान का महत्व हिंदू धर्म में बहुत अधिक है। कुम्भ स्नान करने से पापों का नाश होता है और आत्मा की शुद्धि होती है।कुंभ स्नान करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है। कुम्भ स्नान करने से आध्यात्मिक उन्नति होती है और आत्मा की उन्नति होती है। कुम्भ स्नान करने से सामाजिक एकता को बढ़ावा मिलता है और लोग एक दूसरे के साथ मिलकर पूजा–अर्चना करते हैं। कुम्भ स्नान करने से प्राकृतिक और आध्यात्मिक सौंदर्य का अनुभव होता है। कुम्भ स्नान करने से आत्म–शुद्धि और मन की शुद्धि होती है। कुम्भ स्नान करने से धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व को समझने का अवसर मिलता है।

कुम्भ स्नान फल

सहस्त्रं कार्तिके स्नाने शतानि च।
बैशाखे नर्मदा स्नाने कुम्भ स्नाने तत्फलं।।
अश्वमेध सहस्त्राणि बाजपेय शतानि च।
लक्षं प्रदक्षिणां पृथिव्या कुम्भ स्नाने तत्फलं।।

कुम्भ पर्व पर स्नान करने से वे सभी थल एक साथ प्राप्त होते हैं जो एक हजार कार्तिक स्नान, सौ माघ स्नान, कितने ही वैशाख एवं नर्मदा स्नान करने तथा सहस्त्र अश्वमेध, सौ बाजपेय यज्ञ करने अथवा पृथ्वी की एक लाख प्रदक्षिणा करने से प्राप्त होते हैं।

कुम्भ स्नान करने वाले प्राचीन काल के प्रमुख साधु संत

वैदिक काल के साधु संत

1. **अगस्त्य मुनि :** अगस्त्य मुनि एक प्रमुख वैदिक ऋषि थे जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
2. **वशिष्ठ मुनि :** वशिष्ठ मुनि एक प्रमुख वैदिक ऋषि थे जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
3. **व्यास मुनि :** व्यास मुनि एक प्रमुख वैदिक ऋषि थे जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

पौराणिक काल के साधु–संत

1. **शंकराचार्य :** शंकराचार्य एक प्रमुख हिंदू संत थे जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

2. **रामानुजाचार्य :** रामानुजाचार्य एक प्रमुख हिंदू संत थे जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

3. **मध्वाचार्य :** मध्वाचार्य एक प्रमुख हिंदू संत थे जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

मध्यकालीन काल के साधु संत

1. **चैतन्य महाप्रभु :** चैतन्य महाप्रभु एक प्रमुख हिंदू संत थे जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

2. **तुकाराम :** तुकाराम एक प्रमुख हिंदू संत थे जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

3. **मीराबाई :** मीराबाई एक प्रमुख हिंदू संत थीं जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

भक्तिकाल के संत जो कुम्भ स्नान करने वाले प्रमुख हैं :

उत्तर भारत के संत

1. **कबीरदास :** कबीरदास एक प्रमुख भक्तिकालीन संत थे जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

2. **गोस्वामी तुलसीदास :** गोस्वामी तुलसीदास एक प्रमुख भक्तिकालीन संत थे जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

3. **संत रविदास :** संत रविदास एक प्रमुख भक्तिकालीन संत थे जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

दक्षिण भारत के संत

1. **श्री चैतन्य महाप्रभु :** श्री चैतन्य महाप्रभु एक प्रमुख भक्तिकालीन संत थे जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

2. **श्री रामानुजाचार्य :** श्री रामानुजाचार्य एक प्रमुख भक्तिकालीन संत थे जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

पश्चिम भारत के संत

1. **संत ज्ञानेश्वर :** संत ज्ञानेश्वर एक प्रमुख भक्तिकालीन संत थे जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

2. **संत तुकाराम :** संत तुकाराम एक प्रमुख भक्तिकालीन संत थे जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

3. **संत एकनाथ :** संत एकनाथ एक प्रमुख भक्तिकालीन संत थे जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

प्राचीन राजा जिन्होंने कुम्भ स्नान किया

1. समुद्रगुप्त गुप्त वंश के राजा थे, जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

2. हर्षवर्धन पुष्यभूति वंश के राजा थे, जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

3. पृथ्वीराज चौहान चौहान वंश के राजा थे, जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

4. जयचंद गहड़वाल वंश के राजा थे, जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

5. अनंगपाल तोमर तोमर वंश के राजा थे, जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

6. राजा भोज एक प्रसिद्ध परमार वंश के राजा थे, जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

7. राजा विक्रमादित्य एक प्रसिद्ध गुप्त वंश के राजा थे, जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

8. राजा हर्षदेव एक प्रसिद्ध चंदेल वंश के राजा थे, जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

9. चंद्रगुप्त प्रथम गुप्त वंश के संस्थापक थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
10. समुद्रगुप्त गुप्त वंश के एक प्रमुख राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
11. चंद्रगुप्त द्वितीय गुप्त वंश के एक अन्य प्रमुख राजा थे उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
12. कुमारगुप्त गुप्त वंश के एक राजा थे उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
13. महाराजा हेमूरू महाराजा हेमू एक राजा थे उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
14. महाराजा भीम सिंह राणा एक राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

गुर्जर–प्रतिहार वंश के राजा जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था

1. महाराजा हरिश्चंद्र गुर्जर–प्रतिहार वंश के प्रमुख राजा थे उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
2. महाराजा नागभट्ट प्रथम गुर्जर– प्रतिहार वंश के राजा थे उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
3. महाराजा वत्सराज गुर्जर–प्रतिहार वंश के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
4. महाराजा महीपाल प्रथम गुर्जर–प्रतिहार वंश के राजा थे उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
5. महाराजा महेंद्रपाल गुर्जर–प्रतिहार वंश के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

नाग वंश के राजा जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था

1. महाराजा गंधर्वसेन नाग वंश के एक प्रमुख राजा थे उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
2. महाराजा भास्करवर्धन नाग वंश के एक राजा थे उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
3. महाराजा नरवर्मन नाग वंश के एक राजा थे उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
4. महाराजा वासुदेव वर्धन नाग वंश के एक राजा थे उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
5. महाराजा हर्षवर्धन नाग वंश के एक प्रमुख राजा थे उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

चंदेल राजा जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था

1. महाराजा जयशक्ति चंदेल राजाओं में से एक थे उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
2. महाराजा विद्याधर चंदेल राजाओं में से एक थे उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
3. महाराजा त्रिलोक्यवर्धन चंदेल राजाओं में से एक थे उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
4. महाराजा धंगदेव चंदेल राजाओं में से एक थे उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
5. महाराजा परमर्दिदेव चंदेल राजाओं में से एक थे उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

चौहान वंश के राजा जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था

1. अजयपाल चौहान चौहान वंश के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
2. विग्रहराज चौहान चौहान वंश के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
3. अर्णोराज चौहान चौहान वंश के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
4. जगद्देव चौहान चौहान वंश के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

बुन्देला राजा जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था

1. महाराजा रुद्र प्रताप सिंह बुन्देला राजा थे उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
2. महाराजा भारती चंद बुन्देला राजा थे उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
3. महाराजा छत्रसाल बुन्देला राजा थे उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
4. महाराजा जगतराज बुन्देला राजाओं में से एक थे उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

गायकवाड़ वंश के राजा जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था

1. **महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ तृतीय :** महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ तृतीय गायकवाड़ वंश के प्रमुख राजा थे उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
2. **महाराजा फतेहसिंह राव गायकवाड़ :** महाराजा फतेहसिंह राव गायकवाड़ गायकवाड़ वंश के राजा थे उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
3. **महाराजा गणपतराव गायकवाड़ :** महाराजा गणपतराव गायकवाड़ गायकवाड़ वंश के राजा थे उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
4. **महाराजा खंडेराव गायकवाड़ :** महाराजा खंडेराव गायकवाड़ गायकवाड़ वंश के राजा थे उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
5. **महाराजा प्रतापसिंह राव गायकवाड़ :** महाराजा प्रतापसिंह राव गायकवाड़ गायकवाड़ वंश के राजा थे उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

तिब्बत के राजा जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था

1. **महाराजा सोंगत्सन गंपो :** महाराजा सोंगत्सन गंपो तिब्बत के एक प्रमुख राजा थे उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
2. **महाराजा त्रीसोंग देत्सन :** महाराजा त्रीसोंग देत्सन तिब्बत के एक राजा थे उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
3. महाराजा राल्पाचन तिब्बत के एक राजा थे उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
4. महाराजा लांगदरमा तिब्बत के एक राजा थे उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
5. **महाराजा त्सांग्या ग्यात्सो :** महाराजा त्सांग्या ग्यात्सो तिब्बत के एक प्रमुख राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

नेपाल के राजा जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था

1. महाराजा पृथ्वीनारायण शाह नेपाल के प्रमुख राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

2. महाराजा राजेंद्र बिक्रम शाह नेपाल के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
3. महाराजा सुरेंद्र बिक्रम शाह नेपाल के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
4. **महाराजा पृथ्वी बीर बिक्रम शाह** : महाराजा पृथ्वी बिर बिक्रम शाह नेपाल के प्रमुख राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
5. महाराजा त्रिभुवन बीर बिक्रम शाह : महाराजा त्रिभुवन बीर बिक्रम शाह नेपाल के एक राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

भूटान के राजा जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था

1. महाराजा सिंग्ये नामग्याल भूटान के प्रमुख राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
2. महाराजा जिग्मे नामग्याल भूटान के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
3. महाराजा जिग्मे सिंग्ये वांगचुक भूटान के प्रमुख राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
4. महाराजा जिग्मे खेसर नामग्याल वांगचुक भूटान के एक राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
5. महाराजा जिग्मे सिंग्ये वांगचुक भूटान के प्रमुख राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

ढाका क्षेत्र के एक प्रमुख राजा

1. महाराजा कृष्ण चंद्र राय एक प्रमुख राजा थे उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
2. महाराजा राजा बालिकृष्ण ठाकुर ढाका क्षेत्र के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
3. महाराजा राजा दुर्गाचरण ठाकुर ढाका क्षेत्र के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
4. महाराजा राजा रामचंद्र ठाकुर ढाका क्षेत्र के राजा थे उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
5. महाराजा राजा शिवचंद्र ठाकुर ढाका क्षेत्र के राजा थे उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

बृज क्षेत्र के राजा जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था

1. महाराजा कंस बृज क्षेत्र के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
2. महाराजा वसुदेव बृज क्षेत्र के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
3. महाराजा नंद बृज क्षेत्र के एक राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
4. महाराजा जरासंध बृज क्षेत्र के एक प्रमुख राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

दशार्ण क्षेत्र के राजा जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था

1. महाराजा दमघोष दशार्ण क्षेत्र के प्रमुख राजा थे उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
2. महाराजा श्रुतायुध दशार्ण क्षेत्र के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
3. महाराजा सुमति दशार्ण क्षेत्र के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
4. महाराजा दुर्योधन दशार्ण क्षेत्र के प्रमुख राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
5. महाराजा भीमसेन दशार्ण क्षेत्र के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

बुन्देलखण्ड के राजा जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था

1. महाराजा अलखध्यान बुन्देलखण्ड के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
2. महाराजा उदित सिंह बुन्देलखण्ड के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
3. महाराजा विक्रम सिंह बुन्देलखण्ड के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
4. महाराजा शिवराज सिंह बुन्देलखण्ड के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

अवध क्षेत्र के राजा जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था

1. महाराजा स्वाति अवध क्षेत्र के प्रमुख राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

2. महाराजा त्रिलोक्यवर्धन अवध क्षेत्र के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
4. महाराजा हर्षवर्धन अवध क्षेत्र के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
5. महाराजा गोविंद चंद्र अवध क्षेत्र के प्रमुख राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

गंधार क्षेत्र के राजा जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था

1. महाराजा पुष्यकर्मा गंधार क्षेत्र के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
2. महाराजा वासुदेव गंधार क्षेत्र के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
3. महाराजा मिलिंद गंधार क्षेत्र के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
4. महाराजा कनिष्क गंधार क्षेत्र के एक प्रमुख राजा थे उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

मगध के राजा जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था

1. महाराजा बिम्बिसार मगध के प्रमुख राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
2. महाराजा अजातशत्रु मगध के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
3. महाराजा उदयिन मगध के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
4. महाराजा शिशुनाग मगध के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
5. महाराजा चंद्रगुप्त मौर्य मगध के प्रमुख राजा थे उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

उज्जैनी क्षेत्र के राजा जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था

1. महाराजा विक्रमादित्य उज्जैनी क्षेत्र के प्रमुख राजा थे उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
2. महाराजा चंद्रगुप्त द्वितीय उज्जैनी क्षेत्र के राजा थे उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
3. प्रथमः महाराजा कुमारगुप्त प्रथम उज्जैनी क्षेत्र के राजा थे उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
4. महाराजा स्कंदगुप्त उज्जैनी क्षेत्र के राजा थे उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
5. महाराजा यशोधर्मन उज्जैनी क्षेत्र के प्रमुख राजा थे उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

उत्तराखंड के राजा जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था

1. महाराजा अजीत सिंह उत्तराखंड के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
2. महाराजा प्रद्युम्न शाह उत्तराखंड के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
3. महाराजा उदित सिंह उत्तराखंड के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
4. महाराजा सुदर्शन शाह उत्तराखंड के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
5. महाराजा हर्षदेव उत्तराखंड के प्रमुख राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

पंजाब के राजा जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था

1. महाराजा रणजीत सिंह पंजाब के प्रमुख राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

2. महाराजा खड़क सिंह पंजाब के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
3. महाराजा नौ निहाल सिंह पंजाब के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
4. महाराजा मुल्तान सिंह पंजाब के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
5. महाराजा पटियाला भूपिंदर सिंह पंजाब के प्रमुख राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

हिमाचल प्रदेश के राजा जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था

1. महाराजा संसार चंद हिमाचल प्रदेश के प्रमुख राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
2. महाराजा प्रताप सिंह हिमाचल प्रदेश के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
3. महाराजा विजय सिंह हिमाचल प्रदेश के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
4. महाराजा सिद्ध सिंह हिमाचल प्रदेश के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
5. महाराजा जगत सिंह हिमाचल प्रदेश के प्रमुख राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

मध्यप्रदेश के राजा जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था

1. महाराजा भोज : महाराजा भोज मध्यप्रदेश के प्रमुख राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
2. महाराजा विक्रमादित्य मध्यप्रदेश के प्रमुख राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
3. महाराजा उदय सिंह मध्यप्रदेश के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
4. महाराजा जीवाजी राव सिंधिया मध्यप्रदेश के प्रमुख राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

झारखंड के राजा जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था

1. महाराजा मधुकर राय झारखंड के प्रमुख राजा थे उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
2. महाराजा रघुनाथ शाह झारखंड के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
3. महाराजा तांत्या मंगलवेधे झारखंड के प्रमुख राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
4. महाराजा बिरसा मुंडा झारखंड के प्रमुख राजा थे उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
5. महाराजा अर्जुन सिंह झारखंड के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

राजस्थान के राजा जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था

1. महाराजा अजयसिंह राठौड़ राजस्थान के प्रमुख राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
2. महाराजा जसवंत सिंह राजस्थान के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
3. महाराजा सवाई जयसिंह राजस्थान के प्रमुख राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
4. महाराजा रामसिंह राजस्थान के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
5. महाराजा मानसिंह तोमर राजस्थान के राजा थे उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

छत्तीसगढ़ के राजा जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था

1. महाराजा कमल सिंह छत्तीसगढ़ के एक प्रमुख राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
2. महाराजा अमर सिंह छत्तीसगढ़ के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
3. महाराजा रुद्र प्रताप सिंह छत्तीसगढ़ के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
4. महाराजा विक्रमादित्य सिंह छत्तीसगढ़ के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
5. महाराजा शिवराज सिंह छत्तीसगढ़ के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

बिहार के राजा जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था

1. महाराजा जनक बिहार के प्रमुख राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

2. महाराजा अजातशत्रु बिहार के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
3. महाराजा चंद्रगुप्त मौर्य बिहार के प्रमुख राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

बंगाल के राजा जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था

1. महाराजा शशांक बंगाल के प्रमुख राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
2. महाराजा धर्मपाल बंगाल के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
3. महाराजा देवपाल बंगाल के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
4. महाराजा महिपाल बंगाल के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
5. महाराजा लक्ष्मण सेन बंगाल के प्रमुख राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

गुजरात के राजा जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था

1. महाराजा गायत्रीदेव गुजरात के प्रमुख राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
2. महाराजा कर्णदेव प्रथम गुजरात के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
3. महाराजा सिद्धराज जयसिंह गुजरात के प्रमुख राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
4. महाराजा कुमारपाल गुजरात के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
5. महाराजा भीमदेव प्रथम गुजरात के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

आंध्र प्रदेश के राजा जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था

1. महाराजा कृष्णदेव राय आंध्र प्रदेश के एक प्रमुख राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
2. महाराजा विजय नागर सूर्यदेव राय आंध्र प्रदेश के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

3. महाराजा राजा वासिरेड्डी वेंकटाद्रि नायुडु आंध्र प्रदेश के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

तमिलनाडु के राजा जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था

1. महाराजा राजेंद्र चोल तमिलनाडु के प्रमुख राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
2. महाराजा कुलोत्तुंग चोल तमिलनाडु के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
3. महाराजा राजाराज चोल तमिलनाडु के प्रमुख राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
4. महाराजा वीरपांड्य कत्तबोम्मन तमिलनाडु के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
5. महाराजा सरफोजी तमिलनाडु के प्रमुख राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

आसाम के राजा जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था

1. महाराजा सुकफा आसाम के प्रमुख राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
2. महाराजा प्रताप सिंह आसाम के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
3. महाराजा रुद्र सिंह आसाम के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
4. महाराजा शिव सिंह आसाम के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
5. महाराजा गौरीनाथ सिंह आसाम के प्रमुख राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

मणिपुर के राजा जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था

1. महाराजा पामहीबा मणिपुर के प्रमुख राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
2. महाराजा गरीब निवाज मणिपुर के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
3. महाराजा राजाराज सिंह मणिपुर के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
4. महाराजा बोधचंद्र सिंह मणिपुर के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
5. महाराजा सिर चंद्र सिंह मणिपुर के प्रमुख राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

ओडिशा के राजा जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था

1. महाराजा कारावेल ओडिशा के प्रमुख राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
2. महाराजा खारवेल ओडिशा के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
3. महाराजा अनंतवर्मन चोडगंग ओडिशा के प्रमुख राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
4. महाराजा नरसिंह देव ओडिशा के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
5. महाराजा पुरुषोत्तम देव ओडिशा के प्रमुख राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

केरल के राजा जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था

1. महाराजा मार्तंड वर्मा केरल के प्रमुख राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
2. महाराजा राम वर्मा केरल के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
3. महाराजा श्री केरल वर्मा केरल के प्रमुख राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
4. महाराजा स्वाति थिरुनल केरल के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
5. महाराजा राजा राज वर्मा केरल के प्रमुख राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

कर्नाटक के राजा जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था

1. महाराजा पुलकेशिन कर्नाटक के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
2. महाराजा कृष्णदेवराय कर्नाटक के प्रमुख राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
3. महाराजा अच्युत देवराय कर्नाटक के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
4. महाराजा श्री राजा वोडेयार कर्नाटक के प्रमुख राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

तेलंगाना के राजा जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था

1. महाराजा प्रोलय वेमा रेड्डी तेलंगाना के प्रमुख राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
2. महाराजा रुद्र देव तेलंगाना के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
3. महाराजा प्रताप रुद्र देव तेलंगाना के प्रमुख राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

महाराष्ट्र के राजा जिन्होंने कुम्भ स्नान किया था

1. छत्रपति शिवाजी महाराज महाराष्ट्र के प्रमुख राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
2. छत्रपति संभाजी महाराज महाराष्ट्र के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
3. महाराजा शाहू महाराज महाराष्ट्र के प्रमुख राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
4. महाराजा पेशवा बाजीराव प्रथम महाराष्ट्र के प्रमुख राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
5. महाराजा पेशवा माधवराव प्रथम महाराष्ट्र के राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

आदिवासी राजाओं में से कुछ प्रमुख नाम जो कुम्भ स्नान करने आये थे :

1. महाराजा शंकर शाह गोंडवाना के आदिवासी राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
2. महाराजा ध्रुवनारायण छोटानागपुर के आदिवासी राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
3. महाराजा अर्जुन सिंह भीलवाड़ा के आदिवासी राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
4. महाराजा कृष्णपाल सिंह गढ़वाल के आदिवासी राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
5. महाराजा भूपाल सिंह मेवाड़ के आदिवासी राजा थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।

आजादी के नायकों में से कई प्रयागराज के कुम्भ स्नान करने आये थे।

1. महात्मा गांधी ने 1915 में प्रयागराज में आयोजित कुम्भ मेले में भाग लिया था और कुम्भ स्नान किया था।
2. विनायक दामोदर सावरकर ने 1901 में प्रयागराज में आयोजित कुम्भ मेले में भाग लिया था और कुम्भ स्नान किया था।
3. लाला लाजपत राय ने 1924 में प्रयागराज में आयोजित कुम्भ मेले में भाग लिया था और कुम्भ स्नान किया था।
4. पंडित मदन मोहन मालवीय ने कई बार प्रयागराज में आयोजित कुम्भ मेले में भाग लिया था और कुम्भ स्नान किया था।
5. सरदार वल्लभभाई पटेल : सरदार वल्लभभाई पटेल ने 1947 में प्रयागराज में आयोजित कुम्भ मेले में भाग लिया था और कुम्भ स्नान किया था।
6. पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कुम्भ स्नान किया था। वह 1952 में प्रयागराज में आयोजित कुम्भ मेले में शामिल हुए थे और उन्होंने कुम्भ स्नान किया था।
7. रवींद्र नाथ टैगोर ने 1937 में प्रयागराज में आयोजित कुम्भ मेले में भाग लिया था और कुम्भ स्नान किया था। यह उनके जीवन का एक महत्वपूर्ण क्षण था, जब उन्होंने अपने आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विचारों को एक साथ जोड़ने का प्रयास किया था। ◆

मो. : 8787093085

महाकुम्भ अंतर्मन की चेतना का अनंत प्रवाह

–प्रदीप कुमार गुप्ता

प्रयागराज गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के पावन संगम पर बसा एक प्राचीन शहर है। त्रिवेणी तट पर बसा यह शहर अपनी बौद्धिकता, ऐतिहासिकता, धार्मिकता और आध्यात्मिकता के लिए जग विख्यात है। देश को सबसे ज्यादा प्रधानमंत्री देने का गौरव भी उत्तर प्रदेश के प्रयागराज जनपद को प्राप्त है। इसी प्रयागराज में 12 वर्षों पर महाकुम्भ तथा 06 वर्षों पर अर्ध कुम्भ का आयोजन होता है। वर्ष 2025 में प्रयागराज में दिव्य महाकुम्भ के आयोजन की शुभ घड़ी आ गयी है।

परम्परागत रूप से और भारतीय ज्योतिष विज्ञान के अनुसार यह माना जाता है कि प्रत्येक वर्ष एक विशिष्ट नक्षत्रीय स्थिति में माघ माह में प्रयाग के त्रिवेणी संगम में श्रद्धालुओं को अमरत्व की प्राप्ति होती है। श्री रामचरितमानस में भी इसका उल्लेख मिलता है–

माघ मकरगत रबि जब होई, तीरथपतिहिं आव सब कोई।
देव दनुज किन्नर नर श्रेनीं, सादर मज्जहिं सकल त्रिबेनी।

अर्थात माघ में जब सूर्य मकर राशि पर जाते हैं, तब सब लोग तीर्थराज प्रयाग को आते हैं। देवता, दैत्य, किन्नर और मनुष्यों के समूह सब आदरपूर्वक त्रिवेणी में स्नान करते हैं। ऐसे में, सदियों से माघ माह में प्रयागराज में लाखों श्रद्धालु एवं भक्त कल्पवास करने के लिए स्वतःस्फूर्त भाव से आते रहे हैं। प्रयागराज का धार्मिक, सांस्कृतिक, पौराणिक तथा ऐतिहासिक महत्व है। संत तुलसीदास जी श्री रामचरितमानस में कहते हैं कि–

तहां होई मुनि रिषय समाजा, जाहिं जे मज्जन तीरथ राजा।
मज्जहिं प्रात समेत उछाहा, कहहिं परस्पर हरि गुन गाहा।

अर्थात तीर्थराज प्रयाग में ऋषि–मुनियों का समाज स्नान करने के लिए जुटता है। प्रातःकाल सब उत्साहपूर्वक स्नान करते हैं और फिर परस्पर भगवान के गुणों की कथाएं कहते हैं।

तुलसीदास जी पुनः प्रयाग की महिमा बखानते हुए कहते हैं कि–

संगमु सिंहासनु सुठि सोहा, सपनेहुँ नहिं प्रतिपच्छिन्ह मोहा।
चवँर जमुन अरु गंग तरंगा, देखि होहिं दुःख दारिद भंगा।

अर्थात गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम ही प्रयागराज का अत्यन्त सुशोभित सिंहासन है, अक्षयवट छत्र हैं, जो मुनियों के भी मन को मोहित कर लेता है। यमुना जी और गंगा जी की तरंगे उसके श्याम और श्वेत चंवर हैं, जिनको देखकर ही दुःख और दरिद्रता नष्ट हो जाती है।

संत तुलसीदास जी माता सरयू जी के विषय में कहते हैं कि–

काम कोह मद मोह नसावन, बिमल बिबेक बिराग बढ़ावन।
सादर मज्जन पान किए तें, मिटहिं पाप परिताप हिए तें।

अर्थात यह जल काम, क्रोध, मद और मोह का नाश करने वाला तथा निर्मल ज्ञान और वैराग्य को बढ़ाने वाला है। इसमें आदरपूर्वक स्नान करने से और इसे पीने से हृदय में रहने वाले पाप–ताप मिट जाते हैं। सरयू माता के विषय में यह कथन माता गंगा, माता यमुना और माता सरस्वती के पावन संगम के विषय में भी पूर्णतः सत्य है।

कुम्भ के आयोजन के सम्बन्ध में यह कथा मिलती है कि समुद्र मंथन के बाद निकले अमृत कलश के लिए देवताओं और दैत्यों में विवाद हो गया। इसी छीना–झपटी में प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में अमृत की बूंदें गिरीं। इन्हीं चार स्थानों पर प्रति 12 वर्षों के अंतराल पर महाकुम्भ का आयोजन होता है। कुम्भ का वर्णन भारतीय संस्कृति के आदि ग्रंथ वेदों में भी मिलता है, जहां इसे 'सर्वसिद्धिप्रदः कुम्भः', अर्थात सभी सिद्धियों को प्रदान करने वाले कुम्भ के रूप में मान्यता दी गई है।

महाकुम्भ का यह अवसर एक ऐसा मेला है, जिसमें करोड़ों श्रद्धालु, साधु–संत–महात्मा एवं पर्यटक प्रयागराज में संगम की रेती पर लगभग 45 दिनों तक दीन–दुनिया से बेखबर, सब कुछ भूल कर, भक्ति में लीन हो जाते हैं। उद्देश्य परमानन्द की प्राप्ति। परमानन्द यानि परमेश्वर से साक्षात्कार। संगम की रेती पर बसी तम्बुओं की अस्थायी नगरी जहां ज्ञान, भक्ति और शक्ति का समन्वय होता है, जहां आचार्य, पुरोहित, साधु, संत प्रवचन देते हैं और जनमानस उनका मधुर रसपान कर अपने जीवन को कृतार्थ करने की ओर अग्रसर होते हैं। कल्पवासी, श्रद्धालु, संत, महात्मा मां गंगा, मां यमुना तथा अदृश्य मां सरस्वती के पवित्र और मोक्ष प्रदान करने वाले जल में प्रतिदिन स्नान कर, अपने पूर्व जन्मों के पापों से तथा भावी जीवन के बंधन से मुक्ति की कामना करते हैं। कहा भी गया है कि 'गंगे तव दर्शनात् मुक्तिः', अर्थात हे मां गंगा, आपके दर्शन से ही मुक्ति मिल जाती है।

उत्तर प्रदेश सरकार मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी के नेतृत्व में समर्पित भाव से महाकुम्भ के दिव्य व भव्य आयोजन के लिए युद्धस्तर पर विकास कार्यों का संचालन

कर रही है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के मार्गदर्शन में मुख्यमंत्री जी के विजन से कुम्भ–2019 ने अपनी सफलता से विश्व में भारतीय संस्कृति का नाम रोशन किया और सनातन की धर्म ध्वजा फहराई। कुम्भ 2019 में तीन–तीन विश्व रिकॉर्ड बनाए गए थे। महाकुम्भ–2025 में भी कुछ ऐसे ही रिकॉर्ड देखने को मिल रहे हैं।

कुम्भ विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक समागम है। वर्ष 2019 के कुम्भ में प्रयागराज में लगभग 24 करोड़ श्रद्धालुओं ने आध्यात्मिकता की त्रिवेणी में डुबकी लगाई और उन्होंने हिन्दू धर्म की समग्रता का अनुभव किया। यह अनुमान लगाया जा रहा है कि महाकुम्भ 2025 में

35 से 40 करोड़ श्रद्धालु प्रयागराज की धरती पर धर्म और अध्यात्म का साक्षात अनुभव करने आएंगे। इसमें भारत के साथ ही सम्पूर्ण विश्व के लोग शामिल हैं। ऐसा स्वाभाविक भी है। कुम्भ–2019 के आयोजन में उत्तर प्रदेश सरकार ने स्वच्छता, सुरक्षा और सुव्यवस्था के जो मानक स्थापित किए थे, उनसे देश व दुनिया में उत्तर प्रदेश की नई पहचान बनी थी। वर्ष 2019 का कुम्भ देश को स्वच्छता का संदेश देने में सफल हुआ। कुम्भ 2019 मेला क्षेत्र पूरी तरह खुले में शौच से मुक्त रहा। मुख्यमंत्री जी के कुशल नेतृत्व में उत्तर प्रदेश ने पूर्ण सुरक्षा के साथ इतने विशाल पर्व को सकुशल सम्पन्न कर यह सिद्ध कर दिखाया था कि टीमवर्क, लगन, ईमानदारी, निष्ठा, कर्तव्यपरायणता, दृढ़ निश्चय तथा सुशासन से बड़े से बड़े आयोजन सकुशल सम्पन्न कराए जा सकते हैं।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश सरकार के भगीरथ प्रयासों से कुम्भ–2019 का आयोजन वैश्विक पटल पर अपनी विशिष्ट पहचान बनाने में सफल रहा। प्रधानमंत्री जी के प्रयासों से कुम्भ को यूनेस्को द्वारा 'मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सूची' (इनटेन्जिबिल कल्चरल हेरिटेजलिस्ट) में सम्मिलित किया गया। हर भारतीय को इस पर गौरव की अनुभूति करनी चाहिए।

महाकुम्भ, कुम्भ तथा माघ मेले का आयोजन यद्यपि त्रिवेणी संगम तट पर होता है, तथापि इसका सम्बन्ध पूरे प्रयागराज क्षेत्र से होता है। प्रयागराज के सीमावर्ती जनपद भी इस दृष्टि से महत्वपूर्ण हो जाते हैं। इसके दृष्टिगत प्रदेश सरकार श्रद्धालुओं को हर तरह की सुविधा, सुरक्षा और श्रद्धा एवं भक्ति का वातावरण उपलब्ध कराने के लिए तथा प्रयागराज में आने वाले सभी सन्तों, भक्तों एवं पर्यटकों की सुविधा के लिए अनेक कार्य संचालित कर रही है। महाकुम्भ प्रयागराज 2025 के दृष्टिगत भी प्रयागराज में बहुत से विकास कार्य संचालित किए गए हैं।

श्रद्धालुओं की सुविधा हेतु तथा महाकुम्भ के भव्य आयोजन के लिए प्रदेश सरकार ने कुम्भ–2019 के सापेक्ष महाकुम्भ मेले का विस्तार किया है। महाकुम्भ–2025, 04 हजार हेक्टेयर से अधिक क्षेत्रफल में बसाया जा रहा है। यह मेला 25 सेक्टरों में बांटा गया है, जहां श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए सभी आवश्यक प्रबन्ध किए जा रहे हैं। मेला क्षेत्र में 12 किलोमीटर लम्बाई के अस्थायी घाट, 1850 हेक्टेयर में पार्किंग, 450 किलोमीटर चकर्ड प्लेट, 67 हजार एल.ई.डी. स्ट्रीट लाइट्स, 02 हजार सोलर हाईब्रिड लाइट्स, डेढ़ लाख शौचालय, 01 लाख 60 हजार टेण्ट की व्यवस्था की

जा रही है। माघ, कुम्भ तथा महाकुम्भ मेले की जीवन धारा पाण्टून पुल होते हैं। लाखों–करोड़ों श्रद्धालु मां गंगा के दोनों किनारों पर बसे मेले में इन्हीं पाण्टून पुलों से आवागमन करते हैं। इसके दृष्टिगत इस वर्ष मेले में 30 पाण्टून पुल बनाए जा रहे हैं। जलापूर्ति की समुचित व्यवस्था के लिए मेला क्षेत्र में 1,249 किलोमीटर की पाइपलाइन तथा 85 नलकूप स्थापित किये जा रहे हैं। श्रद्धालुओं एवं पर्यटकों की सुविधा के दृष्टिगत प्रयागराज शहर और महाकुम्भ क्षेत्र का डिजिटल टूरिस्ट मैप तैयार किया जा रहा है। महाकुम्भ मेला क्षेत्र को प्रदेश का 76वां जनपद घोषित किया गया है।

महाकुम्भ के सफल आयोजन के दृष्टिगत प्रयागराज में 07 रिवर फ्रण्ट रोड, 14 नये आर.ओ.बी. तथा अण्डरपास, 07 पुराने घाटों का सौन्दर्यीकरण, सड़कों का चौड़ीकरण एवं सौन्दर्यीकरण, रोड साइड फसाड डेवलपमेण्ट जैसे स्थायी कार्य कराए गए हैं। प्रयागराज में 18 लाख वर्गफीट में स्ट्रीट आर्ट और वॉल म्यूरल के कार्य कराए जा रहे हैं। यह कार्य महाकुम्भ में आने वाले सभी श्रद्धालुओं को सुखद अनुभूति देंगे। महाकुम्भ के समापन के बाद यह प्रयागराजवासियों के जीवन को भी सरल व आनंदित बनाएंगे।

प्रयागराज में मेला क्षेत्र के अलावा श्रद्धालु एवं पर्यटक अन्य स्थानों पर भी दर्शनार्थ या भ्रमण हेतु जाते हैं। उत्तर प्रदेश सरकार श्री हनुमान मन्दिर कॉरिडोर, अक्षयवट, पातालपुरी, सरस्वती कूप, भारद्वाज आश्रम, द्वादश माधव मन्दिर, शिवालय पार्क, दशाश्वमेघ मन्दिर, नाग वासुकि मन्दिर, श्रृंग्वेरपुर, मनकामेश्वर और अलोपशंकरी जैसे पवित्र स्थलों का सौन्दर्यीकरण कर रही है। महाकुम्भ में सभी श्रद्धालुओं को अविरल, निर्मल गंगा जी में स्नान का लाभ मिल सके, इसके लिए प्रदेश सरकार बिजनौर से बलिया तक जीरो डिस्चार्ज के लिए कृत संकल्पित है।

कुम्भ का आयोजन भारतीय सनातन संस्कृति का गौरव है। यह उत्तर प्रदेश के साथ ही, पूरे देश के सम्मान से जुड़ा पर्व है। सभी सनातन धर्मावलम्बियों सहित भारतवासियों को इस पर गर्व है। सभी 12 वर्षों तक इसका इंतजार करते हैं। कुम्भ–2019 के सफल आयोजन के उपरान्त महाकुम्भ–2025 में अब देश व दुनिया की हमसे और अधिक अपेक्षाएं हैं। इसीलिए मुख्यमंत्री जी की सर्वोच्च प्राथमिकता में महाकुम्भ–2025 का सफल व सुरक्षित आयोजन शामिल है।

प्रयागराज महाकुम्भ 2025 अब तक के सभी कुम्भ के सापेक्ष अधिक दिव्य व भव्य बने, इसके लिए मुख्यमंत्री जी ने कोई कोर कसर बाकी नहीं रखी है। मानवता की यह अमूर्त, सांस्कृतिक विरासत पूरी दुनिया को भारतीय सनातन संस्कृति की गौरवशाली परम्पराओं, विविधतापूर्ण सामाजिक परिवेश और लोक आस्था से साक्षात्कार कराने का शुभ अवसर है। इसके लिए प्रदेश सरकार के सभी विभाग तत्पर हैं। प्रयागराजवासी, सन्त–महात्मा उत्साहित हैं तथा देश व दुनिया से लोग महाकुम्भ–2025 में आने के लिए लालायित हैं। यह महाकुम्भ उत्तर प्रदेश के पर्यटन को भी नई ऊंचाइयों पर ले जाने वाला सिद्ध होगा। यह आयोजन उत्तर प्रदेश के साथ ही भारत की सांस्कृतिक, आध्यात्मिक विविधता व विशिष्टता की ग्लोबल ब्रान्डिंग का माध्यम भी बनेगा। वर्ष 2019 के कुम्भ के सफल आयोजन से उत्तर प्रदेश सहित देश की एक सकारात्मक छवि दुनिया में बनी है। इसलिए पूरी दुनिया भी अब इस आयोजन का बेसब्री से इंतजार कर रही है। यह आयोजन आमजन, श्रद्धालु,

पर्यटक, संत–महात्माओं सहित भारत के विविधतापूर्ण समाज की आस्था, अपेक्षा और आकांक्षा के अनुरूप तथा महाकुम्भ की गरिमा व महत्ता के दृष्टिगत आयोजित हो सके, इसके लिए प्रदेश सरकार और भारत सरकार मिलकर कटिबद्ध हैं।

महाकुम्भ–2025 के दौरान 45 दिनों में पौष पूर्णिमा, मकर संक्रान्ति, मौनी अमावस्या, बसन्त पंचमी, माघी पूर्णिमा और महाशिवरात्रि के प्रमुख स्नान है। इन प्रमुख स्नान तिथियों पर करोड़ों श्रद्धालुओ की उपस्थिति मेला क्षेत्र व प्रयागराज में होती है। यह प्रयास किया जा रहा है कि कोई भी पार्किंग संगम से अधिक दूर ना हो। देश व दुनिया के पर्यटकों, श्रद्धालुओं की सुविधा हेतु उनका मेला क्षेत्र तक सुगमतापूर्वक आवागमन हो सके, इसके लिए परिवहन विभाग द्वारा 7000 से अधिक बसों तथा नगर विकास विभाग द्वारा ई.वी. शटल बसों की उपलब्धता की जा रही है।

भारत की प्राचीन संस्कृति के परिचायक महाकुम्भ की गरिमा के अनुरूप समूचे प्रयागराज नगर को सजाया जा रहा है। इसके अन्तर्गत कुम्भ से जुड़े प्रसंगो व सनातन संस्कृति के प्रतीकों को नगर की दीवारों, पुलों आदि पर चित्रित किया जा रहा है। जगह–जगह कुम्भ के 'लोगो' लगाए गए हैं। प्रयागराज के प्रवेश मार्गो पर भव्य प्रवेश द्वार बनाए गए हैं। थीम आधारित द्वार, स्तम्भ लाइटिंग आदि की जा रही है। हर एक वार्ड, हर एक मोहल्ले को स्वच्छ रखते हुए, मेला क्षेत्र सहित पूरे प्रयागराज को स्वच्छता का मॉडल बनाने के लिए भी सरकार कार्य कर रही है। 'ग्रीन प्रयागराज ग्रीन महाकुम्भ' का लक्ष्य लेकर कार्य किया जा रहा है।

महाकुम्भ में आने वाले हर श्रद्धालु पर्यटक के साथ पुलिस कर्मियों का व्यवहार मधुर व मर्यादित हो, इसके लिए फोर्स की तैनाती कर उनकी काउन्सलिंग की गई है। महाकुम्भ में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं, संतों महात्माओं व पर्यटकों के संभावित आगमन को ध्यान में रखते हुए सरकार के समक्ष भीड़ प्रबन्धन एक महत्वपूर्ण चुनौती होती है। इसके लिए पुलिस को 24 घण्टे एक्टिव रहने के निर्देश दिए गए हैं। आर्टिफिशियल इण्टेलिजेंस आधारित भीड़ की निगरानी, भीड़ घनत्व का विश्लेषण, घटना की रिपोर्टिंग, कॉल सेण्टर, खोया–पाया केन्द्र, फायर सेफ्टी, सी.सी.टी.वी. कैमरे, जल पुलिस की तैनाती जैसी समुचित व्यवस्थाएं की गई है। सुरक्षा के सभी मानकों पर पूरी सावधानी व संवेदनशीलता के साथ पुख्ता प्रबन्ध किए गए हैं। कुम्भ हमारी सदियों पुरानी विरासत है। यह परम्परा हमारे संतों, ऋषि–मुनियों, श्रद्धालुओं तथा आम जनमानस के द्वारा न जाने कितने वर्षों से सहेजी गई है। कुम्भ हमें सदैव से नई ऊर्जा व प्रेरणा प्रदान करने के साथ–साथ भारत की एकता, विविधता, समृद्ध धार्मिक परम्परा के प्रति गौरव का सामाजिक सन्देश भी देता है। वर्ष 2019 के प्रयागराज कुम्भ का आयोजन अभी तक हमारी स्मृतियों में बना हुआ है। यह केवल एक मेला ही नहीं, बल्कि पूरी एक दुनिया थी। यह दुनिया मोह–माया से दूर, धर्म और अध्यात्म की ओर उन्मुख थी। महाकुम्भ–2025 भी ऐसा ही आयोजन बनने जा रहा है, जो आने वाली पीढियों को अपने धर्म, अध्यात्म तथा संस्कृति की विशालता और उच्च आदर्शो से परिचित कराएगा।

महाकुम्भ का आयोजन भारत की विविधतापूर्ण संस्कृति का एक जीवन्त आयोजन है। यह एक ही स्थान पर पूरे भारत की संस्कृति के दर्शन करने का भी अवसर है। भारत के सभी प्रान्त और गांवों की संस्कृतियां यहां ईश्वरीय साक्षात्कार का अनुभव करने तथा संगम में स्नान कर पुण्य लाभ की कामना से एकत्र होती हैं। त्रिवेणी संगम पर पवित्र स्नान, दर्शन व पूजन एक अलौकिक अनुभूति है। संगम की रेती पर बसने वाली तंबुओं की नगरी में अखाड़े महाकुम्भ का प्रमुख आकर्षक होते हैं। यह अखाड़े सनातन संस्कृति का प्रतीक है। संत और महात्मा महाकुम्भ के वैभव और गौरव हैं। महाकुम्भ में अखाड़ों की छावनी बसाई जाती है। मेला प्रशासन द्वारा इन्हें जमीन और अन्य सुविधाएं उपलब्ध कराई जाती है।

कुम्भ सामाजिक समरसता का प्रतीक तथा अन्तरराष्ट्रीय समुदाय के लिए आश्चर्य का विषय है। प्रमुख स्नान पर्वों पर महाकुम्भ क्षेत्र में उमड़ने वाली श्रद्धालुओं की भीड़ और उसका कुशल प्रबन्धन देखकर सभी आश्चर्यचकित रह जाते हैं। यह भीड़ विश्व के अनेक देशों की जनसंख्या से भी अधिक होती है। कुम्भ–2019 में मकर संक्रान्ति के प्रथम शाही स्नान के अवसर पर प्रयागराज में 02 करोड़ 25 लाख श्रद्धालु आए थे, जो एक रिकॉर्ड था।

कुम्भ भारतीय संस्कृति का ऐसा पर्व है, जो अमीर–गरीब, ऊंच–नीच, तथा जात–पात के भेदभाव से परे, सबको समरसता का संदेश देता है। महाकुम्भ–2025 इस बात का भी प्रतीक बनने वाला है कि भारत ने समाज को बांटने वाली शक्तियों के विरुद्ध निर्णायक संग्राम छेड़ रखा है। कुम्भ–2019 का दिव्य एवं भव्य आयोजन पूरी दुनिया के लिए कौतूहल का विषय बना था, तो इसके पीछे मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में पूरी सरकार के अथक प्रयास शामिल थे। कुम्भ 2019 में प्रधानमंत्री जी ने स्वयं प्रयागराज की धरती पर गंगा पूजन कर विश्व के सबसे बड़े आयोजन की शुरुआत की थी। डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद के बाद श्री रामनाथ कोविन्द दूसरे राष्ट्रपति थे, जिन्होंने कुम्भ का भ्रमण किया था। यह पूरे विश्व में पहली बार हुआ कि प्रधानमंत्री जी ने स्वच्छ कुम्भ आयोजन में स्वच्छता कर्मियों की भूमिका और योगदान के लिए अपने हाथों से उनके पांव प्रक्षालन कर उनका सम्मान किया था।

महाकुम्भ मेला महज सनातन धर्म की आस्था को ही नहीं प्रकट करता, अपितु यह पूरी की पूरी अर्थव्यवस्था को भी समेटे हुए होता है। पूरे देश के खान–पान, वेश–भूषा और संस्कृति का दर्शन महाकुम्भ में होता है। कुम्भ तथा महाकुम्भ का आयोजन प्रयागराजवासियों को देश व दुनिया की मेजबानी का अवसर देता है। कुम्भ–2019 को बीते हुए 06 वर्ष हो रहे हैं। अभी भी उसकी सुखद स्मृतियां हमारे मानस पटल पर अंकित है।

मुख्यमंत्री जी का प्रयास है कि जो भी महाकुम्भ का साक्षात्कार करे या इसका हिस्सा बने, वह अभिभूत होकर जाए। प्रदेश सरकार महाकुम्भ–2025 को डिजिटल स्वच्छता, डिजिटल सुरक्षा, डिजिटल पार्किंग और डिजिटल स्नान के रूप में आगे बढ़ा रही है। इस बार श्रद्धालुओं और पर्यटकों को डिजिटल महाकुम्भ के दर्शन करने के लिए व्यवस्थाएं की गई है।

महाकुम्भ उत्तर प्रदेश के साथ ही, भारत और सनातन संस्कृति के उत्कर्ष का प्रतीक है। यह आयोजन अद्भुत है, क्योंकि पूरे विश्व में ऐसी किसी अन्य आयोजन की मिसाल नहीं है। यह अलौकिक है, क्योंकि भौतिक जगत में अलौकिकता के अनुभव की कामना से लोग महाकुम्भ में आते हैं। यह अविस्मरणीय बनने वाला है, क्योंकि मुख्यमंत्री जी के विजन, नेतृत्व तथा कर्मठता से महाकुम्भ प्रयागराज–2025 को पहले के सभी कुम्भ अथवा महाकुम्भ के आयोजन से अधिक अच्छा व सुंदर स्वरूप दिया जा रहा है। यह आयोजन आश्चर्यजनक है, क्योंकि इतने बड़े आयोजन के लिए की जाने वाली तैयारियों को देखना तथा आयोजन में शामिल होना किसी आश्चर्य से कम नहीं है। यह

अतुलनीय है, क्योंकि 45 दिनों तक त्रिवेणी संगम किनारे रेती पर बसने वाली तंबुओं की नगरी पूरे विश्व में कहीं नहीं दिखाई देती। इसके साथ ही महाकुम्भ 2025 का यह उत्सव हर भारतवासी को गौरवान्वित करने वाला भी है, क्योंकि यह भारत की विविधतापूर्ण संस्कृति को विश्व पटल पर एकता के भाव से रखने वाला आयोजन है। अमृत काल का यह प्रथम महाकुम्भ आगामी पीढ़ी को प्रेरणा प्रदान करता रहेगा। तो फिर देर न कीजिए, आप भी इस अद्भुत और पवित्र कर देने वाले पल का साक्षी बनने चले आइए दिव्य, भव्य महाकुम्भ में। ◆

• मो. : 770580099

वहीं कुम्भ जहाँ अमृत बरसा

–डा. मधु ताम्बे

यह कहानी प्रायः सर्वविदित है कि देवासुर संग्राम के बाद समुद्रमंथन करके अमृत कुम्भ प्राप्त कर उसका आपस में बंटवारा कर लेने की सहमति दोनों पक्षों में हुई थी। इस सहमति के बाद मंदराचल पर्वत को मथानी एवं शेषनाग को रस्सी के रूप में इस्तेमाल कर देवों एवं असुरों ने मिलकर समुद्र मंथन किया। समुद मंथन करने से समुद्र से बारी–बारी 14 रत्न प्राप्त हुए। 14वां रत्न अमृत घट (घड़ा) था।

समस्या यह थी कि अमृत तो प्राप्त हो गया मगर अब अमृत का वितरण कौन और कैसे करे, यदि असुरों को अमृत मिल जाता तो वे अमृत पान करके अमर हो जाते और पूरे संसार में उत्पात मचाते और आम जनजीवन का जीना मुश्किल हो जाता। अमृत के बंटवारे को लेकर विवाद शुरू हो गया। विवाद इस बात का था कि अमृत का वितरण कौन करेगा, दोनों पक्ष एक दूसरे के प्रति अविश्वास रखते थे। किसी का भी एक दूसरे की निष्पक्षता पर भरोसा नहीं था। दोनों पक्षों में फिर से संघर्ष शुरू ही होने वाला था तब तक भगवान विष्णु एक सुंदर स्त्री का रूप धारण इठलाते बलखाते सामने आ गए और कहा कि यदि आप लोग मुझ पर भरोसा करें तो अमृत बांटने का काम अपने नाजुक हाथों से मैं कर देती हूं। असुर, भगवान विष्णु के सुंदर नारी रूप पर सम्मोहित हो गए और उसे स्त्री के रूप माधुरी पर मुक्त होकर उसके द्वारा अमृत वितरण के प्रस्ताव को सहर्ष स्वीकार कर लिया। देवगण भी उसे सुंदरी के प्रस्ताव से सहमत थे। नारी स्वरूप धारण किए भगवान विष्णु ने देवों एवं अन्य असुरों को अमृत वितरण के लिए अलग–अलग पंक्ति में बैठाया। उन्होंने पहले असुरों के बीच मदिरा का वितरण कर दिया। उसके बाद जब उन्होंने देवों के बीच अमृत का वितरण शुरू किया तो एक असुर चुपके से आकर देव पंक्ति में बैठ गया। देवों के साथ उसे असुर ने भी अमृतपान कर लिया और वह अमर हो गया। इस बीच जब विष्णु जी को यह पता चला कि देव पंक्ति में बैठा एक असुर भी अमृत पी गया तो उन्होंने उसका सिर धड़ से अलग कर दिया, तब तक वह असुर अमर हो चुका था और वह सिर काटने के बाद राहु–केतु नाम से दो असुर बन गया। इस घटना के बाद मदिरा पी कर मस्त पड़े असुरों की निद्रा भंग हो गई और असुरों ने सुंदरी बने विष्णु को दौड़ा लिया। भगवान विष्णु अमृत कुम्भ लेकर भागते रहे। असुर उन्हें

दौड़ाते रहे। इस आपा–धापी में अमृत कुम्भ चार स्थानों प्रयागराज, उज्जैन, नासिक और हरिद्वार में छलका और अमृत की कुछ बूंदें वहां पर गिर गईं इन्हीं चार स्थानों पर कुम्भ पर्व का आयोजन होता है। माना जाता है कि इन स्थानों का जल थल अमृतमय हो गया है। जो इन स्थानों के जल में स्नान करेंगे, वह भगवान की शरण में जाकर मोक्ष को प्राप्त करेगा।

कुम्भ मेले का धार्मिक महत्व

कुम्भ मेला एक पवित्र हिंदू तीर्थ और स्नान पर्व है जो भारत के उपरोक्त चार स्थानों पर आयोजित होता है। यह आयोजन हर तीसरे वर्ष इन चार स्थानों में से किसी एक स्थान पर बारी–बारी से आयोजित किया जाता है। इस प्रकार प्रत्येक कुम्भ स्थल पर कुम्भ मेला हर बारहवें वर्ष पर आयोजित किया जाता है। अर्ध कुम्भ मेला हर छठे वर्ष केवल दो स्थान हरिद्वार और प्रयागराज में आयोजित किया जाता है। इन चारों स्थानों पर पवित्र नदियां हैं जिनके किनारे मेले का आयोजन किया जाता है। हरिद्वार में गंगा, प्रयागराज में गंगा और यमुना और पौराणिक सरस्वती नदी का संगम है। जबकि नासिक में गोदावरी और असणा वसणा नदियों का संगम बताया जाता है। उज्जैन में क्षिप्रा नदी विराजमान है।

कुम्भ मेला किसी विशेष धर्म जाति पंथ तक सीमित नहीं है यह एक ऐसा अवसर है जो भारतीय संस्कृति, भावना, विचार, धर्म, निष्पक्षता का सामंजस्य स्थापित करता है और कुम्भ विभिन्न परंपराओं और विश्वासों के बावजूद भारत की अखंडता और एकता का प्रतीक है, यही कारण है कि कुम्भ मेला भारत के सभी वर्गों के बीच इतना लोकप्रिय है कि कुम्भ मेला आध्यात्मिक लोगों, चिकित्सकों, ज्योतिषविदों, रत्न

वैज्ञानिकों, हस्तरेखा विदों, ज्योतिषियों आदि के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। जिस स्थान पर कुम्भ मेला आयोजित होता है वहां अस्थायी तंबू और टेंट का एक उप नगर बनाया जाता है। यह एक छोटी टेंट नगरी लगता है। इन तंबूओं में लाखों लोग रहते हैं जहां उन्हें सभी सुविधाएं सरकार द्वारा मुहैया कराई जाती है। ऐसा लगता है कि संगम के किनारे एक नगरी बसी है। मेले के कैंपों में पूजा/हवन/प्रवचन आदि का आयोजन किया जाता है।

कुम्भ में पूरे भारत और विदेशों से तीर्थ यात्री आते हैं। बहुत से लोग पहले से ही अपनी यात्रा की योजना बनाते हैं और यात्रा शुरू करते हैं। कुम्भ क्षेत्र की पूरी यात्रा पैदल

तय करते हैं। वह भी सिर पर भारी बोझ लिए बिना जूतों/चप्पल के। यहां तक की ठंड के मौसम में भी खुले मैदान में भक्ति में लीन होकर आराधना करते–करते सोते हैं। संगम तट पर गंगा जी में दिनभर में तीन बार स्नान करते हैं। उपवास रखते हैं या अल्प आहार लेकर भक्ति में लीन रहते है। व्यक्ति पूरे मेले में तरह–तरह के साधु संत रहते हैं, जिसमें साधु–संतों का शाही स्नान कुम्भ में पड़ने वालों पर्वों में कराया जाता है यह शाही स्नान नागा आदि नामों के 13 अखाड़े के साधुओं के होते हैं। कुम्भ के मेले में सबसे ज्यादा आकर्षण का केन्द्र नागा साधु होते हैं, नागा साधुओं का जीवन सभी साधुओं की तुलना में सबसे ज्यादा कठिन होता है, इनका सम्बन्ध शैव परम्परा की स्थापना से माना जाता है। साधुओं को सम्मान देने के लिए कुम्भ के दौरान शाही स्नान में विभिन्न अखाड़ों से जुड़े साधु संत हाथी–घोड़े या सोने–चाँदी की पालकियों पर सवार होकर स्नान के लिए पहुंचते हैं। सदियों से ये स्नान परम्परा चली आ रही है, जिसमें 13 अखाड़े शामिल होते हैं।

हिंदू धर्म में कुम्भ स्नान का महत्व, बेहद विशेष बताया गया है। माना जाता है कि अगर व्यक्ति कुम्भ में स्नान करता है तो उसके सभी पाप समाप्त हो जाते हैं और उसे पापों से मुक्ति मिल जाती है। साथ ही उस व्यक्ति को मोक्ष की प्राप्ति होती है। हिंदू धर्म के लोग अपने गृहस्थ आश्रम की जिम्मेदारियां को पूरा करने के बाद, वानप्रस्थ के समय वह कल्पवास करने के संकल्प को पूरा करने के लिए कुम्भ में आते हैं और जाड़ा, बरसात सभी को सहते हुए तीन समय गंगा में स्नान करते हैं और भक्ति भावना से पूजापाठ/भजन/प्रवचन में लीन रहकर कड़े नियमों का पालन और तपस्या करते हैं।

यही कारण है कि भारत को विश्व की आध्यात्मिक राजधानी कहा जाता है। यह ठीक ही कहा गया है कि आत्मज्ञान या मुक्ति का मार्ग भारत से ही जाता है।

बात अगर प्रयागराज महाकुम्भ की करें तो प्रयागराज को तीर्थराज को संज्ञा दी गई है। प्रयाग को सभी तीर्थों का राजा माना गया है और अगर वहां पर महाकुम्भ का आयोजन हो रहा हो तो वहां का महत्व अपने आप द्विगुणित हो जाता है। प्रयागराज के कुम्भ का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है, क्योंकि वहां पर तीन पुण्य सलिला नदियों गंगा यमुना और अदृश्य सरस्वती का संगम भी है। प्रयागराज में बिना कुम्भ पर्व के ही हर वर्ष माघ अमावस्या को बहुत बड़ा मेला लगता है क्योंकि इस बार भी महाकुंभ प्रयागराज में आयोजित किया जा रहा है और उत्तर प्रदेश सरकार इसको बहुत ही दिव्य और भव्य बनाने को प्रतिबद्ध है। ◆

मो. : 9450282802

आस्था का महाकुम्भ

–डॉ. रंजना जायसवाल

चौरासी लाख योनि में मनुष्य का जन्म सर्वश्रेष्ठ माना गया है। हमारे शास्त्रों में लिखा है कि मनुष्य का शरीर पाने वाला हर वह व्यक्ति धर्म का उपार्जन और मोक्ष प्राप्ति के लिए अगर प्रयत्न नहीं करता तो उसका मनुष्य के रूप में जन्म लेना व्यर्थ है। धन–दौलत, भौतिक सुख–सुविधा केवल उसकी इस जन्म तक ही सीमित होती है लेकिन धर्म–कर्म, दान–दक्षिणा मनुष्य को मोक्ष की ओर ले जाती है।

देवताओं एवं असुरों ने समुद्र के मंथन तथा उसके द्वारा प्रकट होने वाले सभी रत्नों को आपस में बाँटने का निर्णय लिया गया था। समुद्र के मंथन द्वारा जो सबसे मूल्यवान रत्न निकला वह था अमृत...उसे पाने के लिए देवताओं और असुरों के मध्य संघर्ष हुआ। वास्तव में कुम्भ स्नान का अर्थ तन की शुद्धि से अधिक मन की शुद्धि से है।असुरों से अमृत को बचाने के लिए भगवान विष्णु ने उस कुम्भ को अपने वाहन गरुण को दे दिया। असुरों ने जब वह पात्र गरुण से छीनने का प्रयास किया तो उस पात्र में से अमृत की कुछ बूंदें छलक कर हरिद्वार में गंगा के पावन जल में, उज्जैन में क्षिप्रा के शीतल जल में, नासिक में गोदावरी के पवित्र जल में और प्रयागराज में गंगा, यमुना और सरस्वती के संगम स्थल पर गिर गई।

देवताओं का एक वर्ष पृथ्वी लोक के 144 वर्ष के बाद आता है। ऐसी मान्यता है कि 144 वर्ष के बाद स्वर्ग में भी कुम्भ का आयोजन होता है। 144 वर्षों बाद प्रयागराज की पावन धरती पर लगा महाकुंभ का मेला एक साधारण मेला नहीं है बल्कि यह सनातनियों की आस्था, विश्वास और भक्ति का प्रतीक है। यह मेला 13 जनवरी, सन 2025 से प्रारंभ हुआ। पूस की हाड़ कंपा देने वाली ठंड, परिवार और साथियों का हाथ थामे न जाने कितने किलोमीटर की पैदल यात्रा करके आस्था में डूबे हुए लोग जब घाटों पर पहुँचे तो आस्था, भक्ति और विश्वास का मिला–जुला स्वरूप देखने को मिला। पौ फटने से पहले संगम जाने वाली सड़क भक्ति की लहरों में डूब–उतरा रही थी। पंक्तिबद्ध भीड़ इस अलौकिक दृश्य को आँखों में समेटे आस्था के रंग में रंगी घाट की ओर बढ़ती चली जा रही थी। भक्तों में उत्साह इस कदर हिलोर मार रहा था कि कई किलोमीटर की यात्रा की थकान भी उनके चेहरे पर दिखाई नहीं दे रही थी।

रोशनी में नहाया महाकुम्भ का प्रांगण स्थल एक अलौकिक छटा बिखेर रहा था। पूस की पूर्णिमा के पहले स्नान के साथ कल्पवास का भी शुभारंभ हुआ। नदी के दोनों ओर एक जैसे टेंट में 45 दिनों तक संकल्प लिए हुए श्रद्धालु कल्पवास के नियमों का पालन करते हुए नजर आए।ऐसा माना जाता है कि कल्पवास करने से 100 वर्षों तक तपस्या करने के समान पुण्य की प्राप्ति होती है। लगभग 10 लाख

कल्पवासियों ने केला, तुलसी और जौ को रोपित कर 45 दिन तक महाव्रत और संयम का संकल्प लेते हुए कल्पवास का शुभारंभ किया। श्रद्धालुओं के आवागमन को सहज बनाने के लिए 30 पीपे के पुल बनाए गए हैं। इस महाकुम्भ का पहला स्नान पूस की पूर्णिमा को प्रारंभ हुआ।पूस की पूर्णिमा से आरंभ होने वाले इस मेला में स्नान की परंपरा का आरंभ भी होता है। जिस तरह गंगा सागर में समाहित होती नदियों को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि मानो समुद्र से मिलने के लिए नदियां स्वयं आतुर हो आई हो वैसे ही भक्तों की आस्था, विश्वास और भक्ति के ज्वार ने इस कदर जोर मारा कि सूरज के उगने से पहले ही श्रद्धालु संगम के पवित्र जल में डुबकी लगाने लगे।

जनवरी माह में सबसे पहला स्नान पूस की पूर्णिमा को था। स्नान करने के लिए पतित पावन संगम के तट पर श्रद्धालुओं का जमावड़ा लगा हुआ था। आस्था के इस महासागर में लोगों ने प्रात चार बजे से ही डुबकी लगाना प्रारंभ कर दिया था। सुबह चार बजे से आठ बजे तक लगभग 40 लाख श्रद्धालुओं ने गंगा और यमुना के पवित्र जल में डुबकी लगा ली थी। यह क्रम लगातार चलता रहा और सुबह आठ बजे से दोपहर बारह बजे तक इनकी संख्या 90 लाख तक पहुँच गई थी। जैसे–जैसे दिन चढ़ता क्या श्रद्धालुओं की आस्था का सैलाब भी उमड़ता गया। दोपहर बारह से शाम चार बजे तक लगभग 1 करोड़ 60 लाख श्रद्धालुओं ने पवित्र जल में डुबकी लगा ली थी।शाम चार बजे से देर रात तक यह संख्या एक करोड़ 75 लाख तक पहुँच चुकी थी। हर तरफ नरमुंड ही नरमुंड ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो घाटों पर आस्था का कुम्भ उतर आया हो।सोमवार की सुबह 4:32 पर पुण्य काल के आरंभ होते ही संपूर्ण घाट हर–हर गंगे के उद्घोष से गुंजायमान हो उठा।सूर्य देव मानो स्वयं उनके स्वागत के लिए हाथ जोड़ खड़े थे। कड़ाके की ठंड और कोहरा भी श्रद्धालुओं के मनोबल को तोड़ ना सका। मकर संक्रांति पर्व पर मंगलवार को अखाड़े का अमृत संसार स्नान करीब 9:30 घंटे तक चला। साधु–संन्यासियों को शिविर से निकलने और वापस आने में लगभग 12 घंटे का समय लगा। अखाड़े के संतों एवं नागाओं के स्नान का समय भी पहले ही निश्चित हो चुका था।सबसे पहले महानिर्वाणी एवं अटल अखाड़े के संत ने इस पवित्र जल में स्नान किया और 6:15 बजे हुए संगम तट पर पहुंच गए थे और करीब 40 मिनट तक अमृत स्नान करने के पश्चात निरंजन एवं आनंद अखाड़ा के संत 7:05 पर स्नान करने के लिए पतित पावन जल में उतरे। इसी तरह से जूना,आवाहन एवं पंच अग्नि अखाड़ा के संत सुबह 8:00 बजे स्नान करने के लिए प्रस्थान किया।निर्वाणी,दिगंबर, निर्मोही अखाड़ा के संत क्रमशः 10:40, 11:20 एवं 12:00 बजे स्नान किया। नया पंचायती अखाड़ा के संत ने दोपहर 1:15 तथा बड़ा पंचायती के 2:20 निर्मल पंचायती अखाड़ा के संत ने 3:40 से लेकर 4:20 तक महाकुम्भ के इस अवसर पर पतित जल में स्नान ध्यान किया। रथों पर सवार आचार्य, मंडलेश्वर और महामंडलेश्वर ने पूरी गरिमा के साथ अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

शास्त्रों में ऐसा कहा गया है कि मकर संक्रांति के दिन यज्ञ में दी गई आहुतियों और मंत्रोच्चार को प्राप्त करने के लिए स्वयं देवता धरती पर अवतरित होते हैं। कुम्भ में पाँच प्रमुख स्नान माने जाते हैं। कुम्भ का प्रथम शाही स्नान मकर संक्रांति को ही माना जाता है। यद्यपि महाकुम्भ का स्नान पूस की पूर्णिमा से ही प्रारंभ हो गया था लेकिन स्नान–दान का विशेष महत्व मकर संक्रांति को ही माना गया है।

जूना अखाड़े के संरक्षक ने इस दिन को खास बनाने के लिए और देश–विदेश से आए श्रद्धालुओं को त्याग और समर्पण का संदेश देने के लिए अपने साथियों के साथ पैदल चलने का निर्णय लिया। किन्नर अखाड़े की महामंडलेश्वर लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी के नेतृत्व में सभी संन्यासियों ने जून अखाड़े के साथ स्नान किया। इस अवसर उन्होंने शक्ति प्रदर्शन भी किया। साधु–संन्यासी से लेकर शाही अखाड़े और जनमानस तक में इस विशिष्ट मुहूर्त में स्नान ध्यान और

दान की परंपरा है। इस अवसर पर दिया गया दान मोक्ष की ओर ले जाता है। मकर संक्रांति के दिन स्नान को अमृत स्नान की संज्ञा दी गई है। मकर संक्रांति के पावन दिन अखाड़े से जुड़े साधु—संन्यासी गाते—बजाते शंखनाद करते संगम तट पर पहुँचे और अमृत स्नान कर महाकुंभ की घोषणा की। ततपश्चात आम जनमानस ने स्नान किया। इस अवसर पर नागा साधुओं ने घोड़ों पर सवार होकर शस्त्रों के साथ युद्ध कला का प्रदर्शन करते हुए स्नान किया। इस दौरान वह अपनी पूर्ण श्रृंगार के साथ उपस्थित थे। जटाओं में फूल, गले में माला, हवा में त्रिशूल लहराते और नगाड़े बजाते इन नागाओं को देख सभी मंत्र—मुग्ध थे। इस अवसर पर महिला नागा संन्यासी भी बड़ी संख्या में उपस्थित थीं। मकर संक्रांति के दिन साढ़े तीन करोड़ श्रद्धालुओं ने आस्था और विश्वास की डुबकी लगाई।

उत्तर प्रदेश सरकार ने श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए यातायात प्रबंधन, स्वास्थ्य सेवाओं, सुरक्षा, सफाई के लिए विशेष प्रबंध किए हैं। मुख्य स्नान के दिन सेटेलाइट के माध्यम से सुरक्षा के खड़े इंतजाम किए गए हैं। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने इस महाकुम्भ को महादिव्य, महाभव्य और अविस्मरणीय बनाने का संकल्प लिया है। सरकार की तरफ से श्रद्धालुओं के स्वागत हेतु हेलीकॉप्टर के माध्यम से 20 क्विंटल पुष्प वर्षा कर उनका अभिनंदन किया गया। साथ ही उनके रहने की व्यवस्था के लिए जगह—जगह पर रेन बसेरा और शिविरों का भी निर्माण किया गया है। इस अवसर पर अमेरिका, रूस, जर्मनी, जापान, इजरायल, इटली, इक्वाडोर समित दुनिया भर के विभिन्न देशों से आए मेहमान सनातन संस्कृति से अभिभूत नजर आए। माथे पर तिलक और मुँह पर जय श्री राम का नारा और जयकारा लगाते विदेशी श्रद्धालु महाकुंभ के रंग में पूरी तरह से डूबे हुए नजर आए। देशभर से एकत्र हुए श्रद्धालुओं ने अस्त्र—शस्त्र और पूरी साज—सज्जा के साथ निकले साधु—संतों के आध्यात्मिक वैभव को देख भाव विभोर होते देखा गया। जनता—जनार्दन ने उनकी चरण रज को सिर माथे पर लगाकर दिव्य अनुभूति का अनुभव किया। आस्था के इस सैलाब को सहज और व्यवस्थित रूप से समेटने के लिए उत्तर प्रदेश सरकार और केंद्र सरकार ने जी तोड़ मेहनत की है और उनकी इस मेहनत ने आज अपना रूप दिखाना शुरू कर दिया है। इन स्नानों में मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक परम्परा अद्भुत छटा के साथ संगम के तट पर अठखेलियाँ करती नजर आई।

महाकुम्भ में कुल छः स्नान होंगे। पूस पूर्णिमा (13 जनवरी), मकर संक्रांति (14 जनवरी और मौनी अमावस्या (29 जनवरी) को सम्पन्न हुआ। आगामी तिथियों पर पड़ने वाले अमृत स्नानों में श्रद्धालुओं की संख्या और भी बढ़ने की पूर्ण सम्भवना है। भक्ति और विश्वास के इस समागम में एक बार आप भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराइए। ◆

मो. : 9415479796

प्रयागराज महाकुम्भ का अनुपम प्रबंधन

–अशोक कुमार सिन्हा

ऋग्वेद के खिल सूक्त (10.75) में कहा गया है कि जहां कृष्ण और श्वेत जल वाली दो सरिताओं का संगम है वहां स्नान करने से मनुष्य स्वर्गारोहण करता है। मत्स्य, स्कंध काशी और पद्म पुराण में प्रयागराज को तीर्थराज नाम से अभिहित किया गया है। पुराणोक्ति यह है कि प्रजापति ब्रह्मा ने यहां प्रयाग में सर्वप्रथम यज्ञ किया था। जब सूर्य तथा चंद्र मकर राशि पर हो, गुरु वृषभ राशि पर हो, अमावस्या हो, यह सभी योग जुटने पर प्रयाग में कुम्भ योग पड़ता है। 144 वर्ष बाद विशेष संजोग से 13 जनवरी से 26 फरवरी, 2025 तक महाकुम्भ लगा है। भागवत पुराण के अनुसार समुद्र मंथन से निकले अमृत कलश से प्रयाग उज्जैन नासिक और हरिद्वार में अमृत बूंदे छलकने से इन स्थानों पर 12 वर्षों के अंतराल पर कुम्भ उत्सव का आयोजन होता है। गुप्त काल में कुम्भ काल की व्यवस्था को धरातल मिला। धार्मिक मंडली की मान्यता मिली। सम्राट हर्षवर्धन के समय कुम्भ चमकदार पहचान बन चुकी थी। सातवीं शताब्दी में चीनी यात्री ह्वेनसांग अपने यात्रा वृतांत में लिखता है कि हर 5 वर्ष बाद सम्राट हर्षवर्धन कुम्भ प्रयाग की व्यवस्था और दान पुण्य में अपने खजाने की पूरी संपत्ति समाप्त कर देते थे। मुगल काल में बादशाह अकबर ने प्रयाग कुम्भ की गहराई को समझा और यहां शहर बसा कर इलाहाबाद नामकरण किया। दुर्ग बनाया, घाटों का निर्माण कराया। अकबरनामा के अनुसार 1567 में अकबर कुम्भ मेला देखने प्रयागराज गया। ''कुलसवातुल तवारीख'' में जिक्र है कि यात्रियों से लगान वसूला जाता था। 1589 में शाही खजाने से 19000 मुगलिया सिक्के खर्च हुए तथा कुल 48000 सिक्के टैक्स से कमाई हुई। आदि शंकराचार्य ने संन्यासी अखाड़ों की स्थापना सनातन रक्षण तथा भ्रमण, तीर्थाटन परंपरा डाली। अंग्रेजी शासन काल में इस मेले में व्यवस्था के नाम पर 1 रुपया 4 आना प्रतिव्यक्ति टैक्स वसूला जाने लगा। यह बात ''कुम्भ सिटी प्रयागराज'' नामक पुस्तक तथा गजेटियर में लिखा है। 1857 के क्रांति के बाद अंग्रेज कुम्भ

मेले में एकत्रित भीड़ से डरने लगे थे। वह 1810 से ही रेगुलेटिंग एक्ट लगाकर 1 रुपया प्रति व्यक्ति टैक्स लगाते थे। कहीं किसी क्रांति को हवा न लगे इस लिए कुम्भ को शर्तों के दायरे में लाया गया। सिर के बाल मुंडन करने पर नाइयों से विशेष टैक्स लिया जाने लगा। अंग्रेजों ने मेले में साफ सफाई का विशेष प्रबंध तो किया परंतु मेले को विशेष कमाई का जरिया बना लिया। उनको व्यवस्था पर ₹20000 खर्च करने पर ₹50000 की आमदनी टैक्स से होने लगी थी। आजाद भारत में 1954 में पहला कुम्भ पड़ा जिसमें राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने एक मास का कल्पवास किया था तथा प्रधानमंत्री पंडित नेहरू ने संगम में डुबकी भी लगाई थी। सरकार ने एक करोड़ 10 लाख रुपया व्यवस्था में व्यय किया था। अस्थायी अस्पताल, खोया पाया व्यवस्था के प्रसारण हेतु माइक व्यवस्था तथा बिजली व्यवस्था व्यापक रूप से की गई थी, परंतु एक हाथी के बिगड़ जाने से भगदड़ मची जिसमे सैकड़ों श्रद्धालुओं की मृत्यु हो गई थी। उस समय देश की कुल आबादी 30 करोड़ थी जिसमें से लगभग एक करोड़ श्रद्धालुओं ने संगम में डुबकी लगाई थी। श्रद्धालुओं स्वयं बैलगाड़ी, ऊंट आदि पर पुआल, मिट्टी का चूल्हा, मचिया, जलावन लकड़ी आदि लाद कर कल्पवास स्थान पर ले जाते थे। 2013 के कुम्भ मेले में विश्व हिंदू परिषद ने आयोजित धर्म संसद में धर्म गुरुओं तथा उपस्थित जनों से अयोध्या के भावी राममंदिर के मॉडल की स्वीकृति ली जिसने भारतीय राजनीति और भारतीय संस्कृति की दशा और दिशा दोनों बदल दी थी।

अभेद्य सुरक्षा व्यवस्था में 50 हजार से अधिक पुलिस बल, 56 पुलिस स्टेशन, 2 पुलिस लाइन, एक ट्रैफिक पुलिस लाइन, 2 हजार ड्रोन कैमरे, वाटर ड्रोन, जल पुलिस, घुड़सवार पुलिस, NSG **की पांच टुकड़ियां, डायल 112 की 296 टीम, 95 जिप्सी वाहन, 231 मोटरसाइकिल लगातार सुरक्षा में तैनात हैं। मेला क्षेत्र को एडवांस ए आई ड्रिवन डेटा एनेलिटिक्स सोल्यूशन सिस्टम से सर्विलांस और सुरक्षा को अभेद्य बनाया गया है।**

वर्तमान 2025 में ग्रह नक्षत्रों की विशेष योग में 45 दिनों तक चलने वाले महाकुम्भ में व्यवस्था, भव्यता, सुरक्षा तथा सुंदरता के अद्वितीय प्रयासों ने नया कीर्तिमान बनाया है। इस भव्य आयोजन में लगभग 45 करोड़ श्रद्धालुओं के कुम्भ मेला में पहुंचने की संभावना है। 19 जनवरी तक लगभग 7 करोड़ श्रद्धालुओं ने संगम में डुबकी लगा भी लिया था। व्यवस्था में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मेला प्रारंभ होने से पूर्व 6 बार प्रयागराज का प्रवास किया तथा

समीक्षा बैठकें कर आवश्यक निर्देश दिए। वे तैयारियों का स्वयं निरीक्षण करते रहे तथा संगम जल का स्वयं आचमन कर उसकी शुद्धता तथा निर्मलता का विश्वास जनता को दिलाते रहे। 13 दिसंबर, 2024 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्वयं प्रयागराज पहुंच कर व्यवस्था का निरीक्षण किया तथा 86 हजार करोड़ रुपए की लागत से पूर्ण होने वाली कुम्भ क्षेत्र की कुल 500 परियोजनाओं का लोकार्पण भी किया था। व्यवस्था की दृष्टि से 365 वर्ग किलोमीटर का एक विशेष कुम्भ नगर जिला घोषित किया गया तथा त्वरित व्यवस्था हेतु आवश्यक अधिकारियों, कर्मचारियों की तैनाती की गई। केंद्रीय संगम का 60 वर्ग किलोमीटर मेला क्षेत्र को स्थापित कर योगी जी ने सनातन संस्कृति की एकता और समरसता स्थापित करने वाले इस भव्य आयोजन को अविस्मरणीय बना दिया है। मुख्यमंत्री योगीजी ने मेले की व्यवस्था पर 7 हजार करोड़ रुपए के बजट को व्यय कर दुनिया के सबसे बड़े जनसांस्कृतिक, धार्मिक आयोजन को सनातन के एक बड़े मिसाल के रूप में प्रस्तुत कर दिया है।

कुल 4000 हेक्टेयर क्षेत्रफल को 25 सेक्टरों में विभाजित कर प्रत्येक को सर्व जनसुविधा से सम्पन्न बनाया गया है। 1850 हेक्टेयर क्षेत्रफल में 5 लाख वाहनों के लिए 5 विशेष पार्किंग स्थल बनाए गए। 10 लाख सैप्टिकटैंक युक्त बायोटॉयलेट (शौचालय) बनाए गए तथा 10 हजार स्वच्छता कर्मियों को पूरे मेला क्षेत्र को बराबर साफ रखने हेतु तैनात किया गया है। स्नानार्थियों को रुकने के लिए एक लाख साठ हजार टेंट लगाए गए हैं। लक्जरी टेंट सिटी भी बनाए गए है जिनमें स्नान विशेष के दिन 30 हजार

रुपए तथा सामान्य दिनों में 22 हजार रुपए प्रतिदिन तक का किराया भी ITDC वसूलेगा। अन्य स्थापित सर्वसुविधायुक्त टेंटों में सामान्य यात्रियों को प्रति व्यक्ति 200 रुपए प्रतिदिन का शुल्क लगेगा। कुल 67000 एलइडी स्ट्रीट लाइट, 66 नए ट्रांसफार्मस, 2016 हाइब्रिड स्ट्रीट लाइट, दो नए विद्युत सब स्टेशन तथा 1249 किलोमीटर पेयजल पाइपलाइन बिछाई गई है। पूरे मेला क्षेत्र में 200 वाटर एटीएम, 85 नलकूप स्थापित किए गए हैं। उत्तर प्रदेश के विभिन्न जनपदों से कुम्भ मेला क्षेत्र तक पहुंचने के लिए 7000 विशेष

मुख्य संगम स्थल से स्नान करने के बाद अन्य मुख्य दर्शन स्थलों के कुल 11 नए कॉरिडोर बना कर प्रयागराज को देश का पहला भव्य तीर्थ कॉरिडोर नगर बना दिया गया है। मुख्यरूप से अक्षयवट, भारद्वाज आश्रम, हनुमान मंदिर, श्रृंगवेरपुर कॉरिडोर के साथ ब्रह्मा जी का यज्ञ स्थल, दशाश्वमेध घाट व मंदिर, नागवासुकी मंदिर तथा द्वादश माधव मंदिर का जीर्णोद्धार कर दिया गया है। मेला क्षेत्र में AI तकनीकयुक्त 2600 से अधिक CCTV कैमरे स्थापित कर उन्हें केन्द्रीयकृत मॉनिटरिंग रूम से जोड़ दिया गया है।

यात्री बसों का संचालन किया जा रहा है। मेला क्षेत्र तक पहुंचने के लिए 550 शटल बसों का संचालन हो रहा है जो विशेष स्नान पर्व के एक दिन पूर्व तथा एक दिन बाद तक जनता के लिए निःशुल्क रहेंगी। शेष दिनों में नाममात्र का किराया वसूला जाएगा। इनके लिए मेला क्षेत्र में 7 बस स्टैंड भी बनाए गए है। 400 किलोमीटर में 30 पैंटून ब्रिज, 9 पक्के घाट, 7 रिवर फ्रंट, 12 किलोमीटर में जगह जगह अस्थायी घाट, 14 नए फ्लाई ओवर तथा अंडरपास से प्रयागराज शहर का भव्य नवीनीकरण किया गया है।

सिक्यूरिटी प्लान और इमरजेंसी एक्जीक्यूशन प्लान कुम्भ क्षेत्र हटी सजग हैं। यूनेस्को द्वारा घोषित इस मानवता के अमूर्त सांस्कृतिक विरासत को विकास से सुव्यवस्थित जोड़ने का काम योगीजी ने कर के दुनिया के इस सबसे बड़े धार्मिक आयोजन को जग में विख्यात कर दिया है।

रेल, वायु मार्ग, बस रूट से प्रयागराज संपूर्ण भारत से जुड़ा है। 13000 से अधिक ट्रेनें प्रयागराज से होकर संचालित की जा रही हैं। प्रयागराज नगर में कुल नौ रेलवे स्टेशन क्रमशः प्रयागराज जंक्शन, सूबेदारगंज, प्रयाग

जंक्शन, रामबाग, फाफामऊ, झूंसी, छिवकी, प्रयागराज संगम तथा नैनी रेलवे स्टेशन संचालित हैं जिन्हें साफ एवं सुंदर सुविधायुक्त बनाया गया है। स्टेशन सहित पूरे मेला क्षेत्र में कुल 12 भाषाओं में सूचना प्रसारण की व्यवस्था भी बनाई गई है। कल 55 हवाई उड़ानों के साथ एयरपोर्ट व्यवस्था को समुन्नत किया गया है।

मेला क्षेत्र में कुल 5 हजार ई रिक्शा संचालित हैं। बड़े रेलवे स्टेशनों पर भगदड़ से बचाव हेतु 10 हजार की क्षमता के बड़े होल्डिंग आश्रय स्थल बने हैं। स्टेशन तथा स्टेशन के बाहर QR कोड से तथा सैकड़ों टिकट कलेक्टरों के हाथ में नेट युक्त हैंडहोल्ड ऑटोमैटिक टिकट मशीन से टिकट विक्रय की व्यवस्था है।

अभेद्य सुरक्षा व्यवस्था में 50 हजार से अधिक पुलिस बल, 56 पुलिस स्टेशन, 2 पुलिस लाइन, एक ट्रैफिक पुलिस लाइन, 2 हजार ड्रोन कैमरे, वाटर ड्रोन, जल पुलिस, घुड़सवार पुलिस, NSG की पांच टुकड़ियां, डायल 112 की 296 टीम, 95 जिप्सी वाहन, 231 मोटरसाइकिल लगातार सुरक्षा में तैनात हैं। मेला क्षेत्र को एडवांस ए आई ड्रिवन डेटा एनेलिटिक्स सोल्यूशन सिस्टम से सर्विलांस और सुरक्षा को अभेद्य बनाया गया है। शहर में प्रवेश हेतु 7 राजमार्गों की पूर्ण नाकेबंदी तथा चेकिंग चौकियां स्थापित है। एमडीआरएफ की टीम को सन्नद्ध रक्खा गया है।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने पूरे कुम्भ क्षेत्र को पर्यावरणयुक्त तथा प्लास्टिक मुक्त क्षेत्र बनाने का प्रण लिया है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु संघ स्वयंसेवक करोड़ों की संख्या में सूती झोले में कटोरीदार स्टील की थाली का वितरण कर रहे हैं। वे कैंप लगा कर सहायता शिविर, सूचना केंद्र तथा भूले-भटके लोगों को आपस में मिलाने का कार्य कर रहे हैं।

मेला क्षेत्र में कुल 43 अस्पतालों में 24 घंटे 381 चिकित्सक उपलब्ध हैं। 24 घंटे प्रसूति रोग विशेषज्ञों की उपलब्धता है। नगर के चिकित्सालय में 6000 अतिरिक्त बेड की व्यवस्था है। एयर व जल एंबुलेंस उपलब्ध है। 125 रोड एंबुलेंस कार्यरत है। संपूर्ण चिकित्सा व्यवस्था निःशुल्क है। समुचित दवाएं, क्रिटिकल

केयर यूनिट, ओटी, ऑक्सीजन, मॉनिटर, एडी मशीन तथा बेसिक लाइफ सपोर्ट 24 घंटे उपलब्ध हैं। नगर में 100 से अधिक निजी अस्पताल उपलब्ध हैं। लखनऊ की मेदांता व अन्य बड़े अस्पताल सहित रायबरेली एम्स हॉस्पिटल डिजिटली मेला क्षेत्र से संबद्ध हैं।

मेला क्षेत्र में अलग ट्रैक सूट में ट्रैवल गाइड उपलब्ध हैं। मेला क्षेत्र में फास्टैग संचालित 120 पार्किंग स्थल स्थापित हैं। 5 लेन चौड़ी सड़क पर 13 प्रमुख आध्यात्मिक अखाड़ों की स्थापना की गई हैं जिसमें ज्ञान गोष्ठियों, धार्मिक प्रवचनों, प्रश्नोत्तरी कार्य हेतु बड़े सभास्थल, अन्न क्षेत्र में 20 घंटे निःशुल्क भंडारा, अलाव तथा भक्तों के लिए निवास की व्यवस्था उपलब्ध है। कल्पवास के लिए अलग पर्ण कुटियों की व्यवस्था है।

संपूर्ण व्यवस्था को आधुनिक तरीके से डिजिटलाइज्ड किया गया है। AI बेस्ड संचार व्यवस्था, 192 किलोमीटर ऑप्टिकल फाइबर, बहुभाषी चौट बाट, एआई बेस्ड खोया पाया विभाग, 3 प्रकार की सूचना एवं सहायता देने हेतु मेला क्षेत्र के हर खंभे पर क्यू आर कोड पोस्टर, प्रसार भारती द्वारा संचालित 24 घंटे कुंभवाणी कार्यक्रम का प्रसारण तकनीकी और अध्यात्म का अद्‌भुत संगम बना रहे हैं। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने पूरे कुम्भ क्षेत्र को पर्यावरणयुक्त तथा प्लास्टिक मुक्त क्षेत्र बनाने का प्रण लिया है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु संघ स्वयंसेवक करोड़ों की संख्या में सूती झोले में कटोरीदार स्टील की थाली का वितरण कर रहे हैं। वे कैंप लगा कर सहायता शिविर, सूचना केंद्र तथा भूले भटके लोगों को आपस में मिलाने का कार्य कर रहे हैं।

मेला क्षेत्र में अनेकों प्रदर्शनी मंडप, सांस्कृतिक मण्डप सनातन और विकास कार्यों के प्रचार हेतु स्थापित हैं जहां प्रवेश निःशुल्क हैं। नगर के प्रत्येक चौराहों को वेद पुराण की गाथा के अनुसार सजाया गया है। मानसिक शांति हेतु बर्ड साउंड थेरेपी की व्यवस्था वाइल्ड लाइफ की टीम उपलब्ध करा रही है। नदी में विदेशी सारस पक्षियों के कलरव का आनंद आप को मिलेगा। देशभर से आए कला एवं हस्तशिल्पियों के वस्तुओं की खरीदारी भी आप कर सकते हैं। स्वच्छ त्रिवेणी जल का आचमन कर घर के पूजाघर के लिए भी जल कलश लाइए। आप प्रयागराज पधारिए और अध्यात्म, संस्कृति और धार्मिक पुण्य की डुबकी लगाइए। सर्वे भवन्तु सुखिनः की सांस्कृतिक आत्मा का दर्शन कीजिए। ऐतिहासिक, सांस्कृतिक अविस्मरणीय प्रयागराज आप की प्रतीक्षा में तत्पर है। ◆

मो. : 945314003

पूरी हो रही हर आस
मिल रहा पक्का आवास

प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) के अंतर्गत
नए लाभार्थियों की चयन प्रक्रिया में

सर्वेक्षण कार्य खंड विकास अधिकारियों के पर्यवेक्षण में सर्वेयर द्वारा संपादित

'आवास प्लस ऐप' पर पात्र नागरिकों द्वारा स्वयं भी रजिस्ट्रेशन की सुविधा उपलब्ध

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें

• ग्राम पंचायत सचिव • खंड विकास अधिकारी
• परियोजना निदेशक (जिला ग्राम्य विकास अभिकरण) • मुख्य विकास अधिकारी

टोल फ्री नंबर : 1800-180-4042

ग्राम्य विकास विभाग, उत्तर प्रदेश

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

महाकुम्भ 2025 प्रयागराज

13 जनवरी से 26 फरवरी

सनातन गर्व महाकुम्भ पर्व

महाकुम्भ मेला क्षेत्र में प्रवेश मार्गों का विवरण एवं मैप

सामान्य दिन - यातायात योजना

जौनपुर मार्ग

आगमन- जौनपुर से फूलपुर → सहसों चौराहा → रिंग रोड → जे.के.डी.एल. रोड → नागेश्वर मंदिर पार्किंग, शिवमंदिर उस्तापुर पार्किंग → उस्तापुर छतनाग मार्ग → ऐरावत संगम घाट

आगमन- जौनपुर से सहसों चौराहा → फाफामऊ-थरवई →गारापुर तिराहा →गारापुर रोड →चीनी मिल पार्किंग →पूरे सूरेदास →बदरा सोनौटी उत्तरी-दक्षिणी पार्किंग → समयामाई पार्किंग → ओल्ड जीटी संगम घाट सेक्टर नं.-5

वापसी- ऐरावत संगम घाट → नागेश्वर मंदिर/शिवमंदिर उस्तापुर पार्किंग → नीवीकला तिराहा → जे.के.डी.एल. रोड → रिंग रोड → सहसों जंक्शन → फूलपुर → जौनपुर

वापसी- ओल्ड जीटी संगम घाट → चीनी मिल/पूरेसूरदास → रहिमापुर मार्ग → अंदावा सहसो मार्ग → सहसों जंक्शन → फूलपुर जौनपुर

वाराणसी मार्ग

आगमन- वाराणसी से राजातालाब → भदोही → हण्डिया → सैदाबाद → हनुमानगंज → हबुसा मोड़ →कनिहार मोड़ →कनिहार अण्डरपास चमनगंज → जे.के.डी.एल. मार्ग → नागेश्वर/शिवमंदिर उस्तापुर पार्किंग → ऐरावत संगम घाट

वापसी- ऐरावत संगम घाट→जे.के.डी.एल.मार्ग→रिंग रोड→ सहसों हबुसा→ हबुसा मोड़→ हनुमानगंज →सैदाबाद→ हण्डिया→भदोही→ राजातालाब→ वाराणसी

मीरजापुर मार्ग

आगमन- मीरजापुर →रज्जू भइया यूनिवर्सिटी → सरस्वती हाईटेक पार्किंग → मदनुवा पार्किंग → ओमेक्स सिटी पार्किंग/टेण्ट सिटी पार्किंग → देवरख पार्किंग → अरैल संगम घाट

वापसी- अरैल संगम घाट → देवरख पार्किंग → ओमेक्स सिटी/टेण्ट सिटी पार्किंग → मदनुवा पार्किंग →सरस्वती हाईटेक पार्किंग → रिंग रोड → मीरजापुर एन0एच0 → मीरजापुर

रीवा-चित्रकूट मार्ग

आगमन- रीवा-चित्रकूट → मामा भांजा तालाब → दांडी तिराहा → टीसीआई मोड़ → खान चौराहा एग्रीकल्चर पार्किंग → नवप्रयागम पार्किंग → गंजियाग्राम पार्किंग → अरैल संगम घाट

वापसी- अरैल संगम घाट → गंजियाग्राम पार्किंग → नवप्रयागम पार्किंग → न्यू यमुना पुल → लेप्रोसी जंक्शन → दांडी तिराहा → मामा भांजा तालाब जंक्शन → चित्रकूट-रीवा

कौशाम्बी मार्ग

आगमन- कौशाम्बी → कोखराज → मूरतगंज → पूरामुफ्ती → मुडेरा मण्डी → धूमनगंज → नेहरू पार्क पार्किंग → एमजी मार्ग → हर्षवर्धन चौराहा → 17 नम्बर पार्किंग → संगम घाट

वापसी- संगम घाट → 17 नम्बर पार्किंग → हर्षवर्धन चौराहा → सीएमपी डॉट पुल → एम.जी. मार्ग → नेहरू पार्क पार्किंग → मुडेरा मंडी → पूरामुफ्ती → मूरतगंज → कोखराज → कौशाम्बी

कानपुर-फतेहपुर-कौशाम्बी मार्ग

आगमन- कानपुर → फतेहपुर → कौशाम्बी → कोखराज →मूरतगंज → पूरामुफ्ती → मुडेरा मण्डी → धूमनगंज → नेहरू पार्क पार्किंग → एमजी मार्ग → हर्षवर्धन चौराहा → 17 नम्बर पार्किंग → संगम घाट

वापसी- संगम घाट → 17 नम्बर पार्किंग → हर्षवर्धन चौराहा → सीएमपी डॉट पुल → एम.जी. मार्ग → नेहरू पार्क पार्किंग → मुडेरा मंडी → पूरामुफ्ती → मूरतगंज → कोखराज → कौशाम्बी → फतेहपुर → कानपुर

लखनऊ-प्रतापगढ़ मार्ग

आगमन- लखनऊ-प्रतापगढ़ → मलाकहरहर इंटरसेक्शन →06 लेन ब्रिज →स्टेनली रोड→लाजपत राय रोड →मण्डलायुक्त कार्यालय→ मजार चौराहा→ आईईआरटी फ्लाई ओवर→ आईईआरटी पार्किंग→ नागवासुकी संगम घाट सेक्टर-06

आगमन- लखनऊ-प्रतापगढ़ → मलाकहरहर इंटरसेक्शन → शान्तिपुरम → फाफामऊ तिराहा → चंद्रशेखर आजाद ब्रिज → फाफामऊ ब्रिज लूप→ रिवर फ्रन्ट रोड → नारायणी आश्रम →गंगेश्वर पार्किंग → गंगेश्वर संगम घाट

आगमन- लखनऊ प्रतापगढ़→ मलाकहरहर इंटरसेक्शन → शान्तिपुरम→ फाफामऊ तिराहा → चंद्रशेखर आजाद ब्रिज→ तेलियरगंज चौराहा→ नारायणी आश्रम रोड→ गंगेश्वर महादेव पार्किंग

वापसी- नागवासुकी संगम घाट सेक्टर-06→ आईईआरटी पार्किंग →आईईआरटी फ्लाई ओवर→ मजार चौराहा → मण्डलायुक्त कार्यालय→लाजपत राय रोड → स्टेनली रोड → 06 लेन ब्रिज→ मलाकहरहर इंटरसेक्शन→ लखनऊ-प्रतापगढ़

वापसी- गंगेश्वर संगम घाट →गंगेश्वर पार्किंग → नारायणी आश्रम→रिवर फ्रन्ट रोड→फाफामऊ ब्रिज लूप→ चंद्रशेखर आजाद ब्रिज→ फाफामऊ तिराहा →शान्तिपुरम→मलाकहरहर इंटरसेक्शन→लखनऊ प्रतापगढ़

वापसी- गंगेश्वर महादेव पार्किंग →नारायणी आश्रम रोड→तेलियरगंज चौराहा→चंद्रशेखर आजाद ब्रिज →फाफामऊ तिराहा→शान्तिपुरम →मलाकहरहर इंटरसेक्शन→लखनऊ प्रतापगढ़

महाकुम्भ की सुगम यात्रा के लिए इस पृष्ठ को अपने साथ सहेज कर रखें एवं यातायात योजना का पालन करें।

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश | UPGovtOfficial | CMOUttarpradesh | CMOfficeUP

mahakumbh_25/ | upmahakumbh | MahaKumbh_2025 | https://kumbh.gov.in/

महाकुम्भ हेल्पलाइन	1920	112	1010	102, 108	18004199139
	महाकुम्भ मेला हेल्पलाइन	इमरजेंसी सर्विस	खाद्य एवं रसद हेल्पलाइन	एम्बुलेंस सेवा	रेलवे हेल्पलाइन

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ.प्र. स्वत्वाधिकारी के लिए शिशिर, निदेशक, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ द्वारा प्रकाशित तथा प्रकाश एन. भार्गव, प्रकाश पैकेजर्स, लखनऊ द्वारा मुद्रित एवं प्रभारी सम्पादक : दिनेश कुमार गुप्ता